संत वाणी

विषय	पृष्ठ
आत्मा के लिए नाश्ता	१
रक्षा मंत्र	२
आत्मा के लिए दोपहर का भोजन	३
आत्मा के लिए रात का भोजन	५
संध्या वंदन	६
प्रभु लावो अपनी चरणी	८
राखा एक हमारा स्वामी	९
ऊंच अपार बेअन्त स्वामी	१०
ऐसी मेरे लाल	११
ऐसी प्रीत करो मन मेरे	१२
एका टेक	१४
तूं समरथ	१५
ऐहा मनोरथ मेरा	१७
प्रभु मेरो इत उत सदा सहाई	१८
राम रंग कदे उतर न जाये	२०
कैसे मिलूं अपने प्रभु से	२१
अब मोहे राम अपना कर जानिया	२३
मेरे मन तन हर गोपाल	२४
हम मूर्ख मुग्ध अज्ञान	२६
कर कृपा कृपाल	२७
कबन गुण प्रानपति मिलू मेरी माई	२९
क्या मांगू	३१
दर्शन मांगू	३३
इह धन मेरे हरि को नाऊ	३४
बिगज्यो कबीरा	३६
मेरा वैद्य	३८
अरदास प्रभु दास जन की	३९
अरदास (दोय कर जोड़)	४१
पुकार (हे गोविन्द हे गोपाल)	४३
तू मेरे प्राण अधार	४५

विषय	पृष्ट
राख पिता प्रभु मेरे	४७
हम ऐसे तू ऐसा माधो	४९
प्रभु कीजे कृपा निधान	५१
रामैय्या हऊं बारिक तेरा	५३
मोहे न विसारो मैं जन तेरा	५४
प्रभु भक्त की निशानी	५६
रामा जिऊं जानहुं तिऊं तार	५७
जां पर कृपा दृष्टि अनुकूला	५८
सतगुरु होय दयाल ताँ श्रद्धा पूरिए	६१
तू समरथ सदा	६२
इक नाम देहु आधारा	६३
गोविन्द नाम मेत विसरे	६५
अब मोहे राम जसो मन गायो	६९
शान्त भई गुरु गोविन्द पाई	६९
नानक की तू टेक है	७०
अब मो को भये राजा राम सहाई	७१
अपने गुरु ऊपर कुरबान	७३
गुरु पूरा आराधिआ, होए कृपाल	७४
दुई २ लोचन पेखा	७५
तू ठाकुर तू साहिबो	७६
तुझ बिन अवर न जाना	७७
संता के कारज आप खलोया	७८
शरणी आयो नाथ निधान	८०
स्वामी शरण परियो दरबारे	८१
मेहरबान साहिब मेरा मेहरबान	८२
रोगी का प्रभु खंड हों रोग	८३
सखी वस आया फिर छोड़ न जाई	८४
सखी सहेली मेरे गृहस्थ अनन्द	८५
तुझ बिन दूजा नाही कोय	८७
प्रभु मेरे प्रीतम प्राण प्यारे	८७

विषय	पृष्ट
गुरु का दर्शन	८९
पिता मेरों बड़ों धनी अगया	९१
आरती सतगुरु की	९२
प्रार्थना	९५
नमस्कार	९७
नमामी नारायण	९९
जों शरण राम की आते हैं	१००
तुम्हारे सहारे यह जीवन है मेरा	१०१
राम नाम की चूड़ियां पहरुं	१०३
मैं तू वहगी अटल सोंहाग	१०४
अब मैं अपने राम रिझाऊ	१०६
मैं तों तेरी दासी	१०७
चाह	१०९
सर्वाधार नमस्कार	१११
(ए राम तेरे नाम का)	
(मुझकों आधार है)	
अभिलाषा	११२
समर्पण	११३
प्रेम की सर्वव्यापकता	११४
अनुभव	११५
मेरे राम प्यारे	११६
सन्तुष्टता	११८
अनुभव	११९
इन्सान	१२०
विश्वास	१२१
भूमिका	१२२
(साई बिना सुख शान्ति नही)	
याचना	१२४
जन्माष्टमी उत्सव	१२५
भजन मन भजले गोविन्द	१२७

विषय	पृष्ट
भजन (मेरे राम न दिल से)	१२८
समधुर सकीर्तन (मेरे रोंम रोंम से ध्वनि निकले)	१२९
कीर्तन धुनि	१३१
ताश का खेल	१३२
प्रेम चक्षु	१३४
भजन (नयनों मे तुम हो)	१३५
होंली के रंग	१३६
होंली	१३७
गीता सार	१४२
मा । की भेट महीने	१४४

—★—

प्रस्तावना

आज सारे संसार को साँसारिक विघ्नों से ग्रसित देख कर मन बहुत उदास हो जाता है।

जिनके पास धन है उन्हें रोग या अल्पायु मृत्यु तंग कर रही है। जो गरीब है, वह वैसे ही दुखी हो रहे हैं। जिनके सन्तान है वह सन्तान द्वारा सुखी नहीं है ऐसे उदाहरण रोज जीवन में सामने आते हैं। किसी को (शराब पीने की) बुरी आदत है, तो सारा घर ही दुखी हो रहा है।

संसार के ऐसे अनेकों नेक कष्टों से छुटकारा पाने के लिये गुरुवाणी कहती है

"मन मेरे गहो हरि नाम का ओला,
तुझे न लागे ताता झोला ॥"

अर्थ : ऐ मेरे मन। यदि तू भी हरि नाम भी राम नाम का आश्रय ले ले तो तुझे वह संसार के ताले झोंले नही लगेंगे ॥

परन्तु हरि नाम कैसे लें ? यही तो नहीं पता लगता। प्रभु का नाम लेने के लिये समय भी तो नहीं मिलता !

जैसे आजकल प्रत्येक कार्य करने के लिये सरल उपाय हो गये हैं उसी प्रकार प्रभु का नाम लेने का भी सरल उपाय खोज निकाला है ॥

वह है अपने प्रभु की शरण में हो जाना पूर्ण रुप से अपने आपको उसके चरणों में समीर्पत कर उसो के आश्रय में रहना ! इन ही लाइनो के द्वारा

कर कृपा प्रभु दीन दयाला।
तेरी ओट पूर्ण गोपाल ॥

प्रत्येक कार्य आरम्भ करने से पूर्व, घर से बाहर जाने से पूर्व, दुख में, सुख में, इन दो लाइनों का आश्रय लीजियेश्रद्धा और विश्वास से। फिर देखिये कैसे चमत्कारिक ढ़ग से आपका कार्य पूर्ण होगा व पग पग सफलता प्राप्त होगी !

भगवान गीता में भी कहते है कि कितना भी पापी हो क्यों न हो यदि वह मेरी शरण आ जाता है, तो मैं उसे साधु की पदवी प्रदान करता हूँ ॥

उसका आश्रय लेकर अपने को उसे सौप देना ही उसकी शरण में जाना है इसलिये सबेरे उठते ही पहले पांचबार यह मन्त्र बोलें

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

फिर अपनी दैनिक क्रिया आरम्भ करें ५ बार क्यों ?
१ मन २ बुद्धि ३ शरीर ४ परिवार ५ बाहर जहाँ भीजाते है। हैलमैट के (कवच) समान ही यह यन्त्र हमारी रक्षा करता है। रात सोते समय एक गिलास पानी में चम्मच चलाते हुए पंचामृत की चौपाईयाँ पाँच बार सभी परिवार जन मिल कर बोलें और उसे अमृत को पी लें। यह अमृत अन्दर बाहर सभी रोग नाश कर देगा। ऐसा पूर्ण विश्वास है।

दोपहर में भी श्री राम, जय राम, जय जय राम के साथ, प्रभु कृपा व नाम माँगने वाली चौपाइयाँ आदि अवश्य बोलनी चाहिए। जिससे मन में नाम का बीज पड़ा रहे व हमें उसकी याद निरन्तर आती रहे।

इस पुस्तक में वह सब मंत्र चौपाइयां तथा मन को जगाने वाले शब्द एकत्रित किये गऐ हैं जिन्हें पढकर हम अपना जीवन सार्थक बना सकते हैं। राम जी राम राम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

आत्मा के लिये नाश्ता
Break Fast the for Soul

क्या कृपा चाहिए ?

कर कृपा प्रभु दीन दयाला, तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।

५ बार

करो दया, करो दया, करो दया मेरे साँई ।

ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुध धयांई

श्वास श्वास सिमरु गौविन्द, मन अंतर को उतरे चिंत ।

याचक जन याचे प्रभु दान, कर कृपा देवो हरि नाम ।

साध जना को माँगू धूरि, पारब्रहम मेरी श्रद्धा पूरि ।।

सदा सदा प्रभु के गुण गाऊं,श्वास श्वास प्रभु तुम्हें धयाऊं

चरण कमल सिउ लागो प्रीत,भगति करू प्रभु का नित नीत

एक ओट एको आधार, नानक माँगै नाम प्रभु सार ।

मंगल भवन अमंगल हारी,द्रवहु सु दशरथ अजिर बिहारी ।

दीन दयाल विरद सम्भारी, हरहु नाथ मम सँकट भारी ।

राम कृपा नाशहिं सब रोगा, जो एहि भांति बने संयोगा ।

ताँ पर कृपा राम की होई, ताँ पर कृपा करे सब कोई ।

सब प्रभु कृपा करहु एहि भाँति,सब तज भजन करू दिन राती

जा पर कृपा दृष्टिअनुकूला,ताहि न व्याप त्रिविध भव शूला

राखा एक हमारा स्वामी, सगल घटा का अन्तर्यामी,

ऐसी कृपा करो प्रभु मेरे, हरि नानक विसरे न काहु बेरे ।

जगत जलंधा राख लै, अपनी कृपा धार ।

जित द्वारें उभरै, जितै लेहो उभार ।

मैं तेरी शरणगति, पूरण दीनदयाल ।
छूट जाऊं संसार से, मेरी पत राखो गोपाल
शरण पड़े चरण रविन्द, जन प्रभु के प्रान ।
सहज सुभाई नानक मिले, जोती जोत समान ।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणम त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ।
ऊँ श्री राम जय राम जय जय राम ।
शंकर हरि ऊँ जय जय सिया राम ।

कर कृपा प्रभु दीन दयाला, तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।
राम जी राम राम ।

अपनी रक्षा के लीये रक्षा मंत्र नित्य प्रति अवश्य बोलना चाहिए ।

रक्षा मंत्र

सिर मस्तक रख्या पारब्रहम ।
हस्त काया राख्या परमेश्वरा ।
आत्म रख्या गोपाल स्वामी, धन चरण रख्या जगदीश्वरा
सर्व राख्या गुरु दयालह, भय दुख विनाशने ।

क्रमशः

भक्ति वत्सल अनाथ नाथे शरण नानक पुरख अच्युत ।
रोगन ते अरु सोगन ते, जल जोगन ते वहु भांति वचावें ।
शस्त्र चलावत एक अनेक,घाव तऊ तन एक लागन न पावे
राखत है अपनो कर दे कर, पाप समुह न भेटन पावे ।

और की बात कहा कहु सो, तो पेट ही के पर बीच बचावे ।
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ।

आत्मा के लिये दोपहर का भोजन
Lunch for the Soul

कर कृपा प्रभु दीन दयाला, तेरी ओट पूण गोपाला ।
५ बार ।

श्री राम जय राम जय जय राम ।

कलियुग केवल नाम आधारा,सिमिर सिमिर नर उतरे पारा
श्री राम ।

दीन दयाल भरोसे तेरे, सब परिवार चढ़ाया बेढ़े ।
श्री राम ।

ऐसी कृपा करो प्रभु मेरे, हरि नानक विसर न काहू बेरे
श्री राम ।

मंगल भवन अमंगल हारी,द्रवहु सु दसरथ अजिर बिहारी ।
श्री राम ।

राखा एक हमारा स्वामी, सगल घटा का अन्तर्यामी ।
श्री राम ।

ता पर कृपा दृष्टि अनुकूला,ताहि न व्याप त्रिविध भवशूला
श्री राम ।

जा पर कृपा राम की होई, तां पर कृपा करे सब कोई ।
श्री राम ।

दीन दयाल विरद संभारी, हरहु नाथ मम संकट भारी ।
श्री राम ।

हरि व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम से प्रगट होय मैं जाना।
श्री राम।

रामहिं केवल प्रेम प्यारा, जान लेहु जेहि जानन हारा
श्री राम

एहि कलिकाल न साधन दूजा,योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा।
करहू प्रणाम कर्म मन वाणी, करो कृपा सुत सेवक जानी।
श्री राम।

कोमल चित अति दीनदयाला,कारण बिन रघुनाथ कृपाला।
श्री राम।

राम राम कहि जे जमुहाही, तिनहि न पाप पुँजसमुहाही।
श्री राम।

जाकर नाम सुनत शुभ होई, मोरे गृह आवा प्रभु सोई।
श्री राम।

सीता राम चरण रति मोरें, अनदिन बढ़हिं अनुगृह तोरें।
श्री राम।

चरण कमल जन का आधार,गुरू गोविन्द मेरे प्राण आधार।
श्री राम।

सफल जनम ताका परवाण, पारब्रहम निकट कर जान।
श्री राम।

जाके अन्तर बसै प्रभु आप, ताके हृदय होइ परगास।
श्री राम।

काम क्रोध इस तन ते जाई, राम रतन बसै मन आइ।
श्री राम।

सतगुरू पुरा मेरे नाल, पारब्रहम जप सदा निहाल ।
श्री राम ।

संतन को बलिहारी जाऊं, संतन के संग राम गुण गाऊं ।
श्री राम ।

राम जी राम राम ।

आत्मा के लिये रात का भोजन
Dinner for the Soul

कर कृपा प्रभु दीनदयाला, तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।
५ बार

राम कृपा नाशहिं सब रोगा, जो एहि भाँति बने संयोग ।
जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करे सब कोई ।
जा पर कृपा दृष्टि अनुकूला, ताहि न व्याप त्रिविध भवशूला
राखा एक हमारा स्वामी, सगल घटा का अन्तर्यामी ।
सभी चौपाइयाँ पाँच बार बोल कर अमृत बनाना है ।
राम जी राम राम

जो कोई सन्ध्या पढ़े पढ़ावे, नरमी सख्ती कढ़े न पावे ।
कदे न देखे भीड़ ए ।

(सार)

इसको प्रतिदिन ७ बार शाम ६ से ७ बजे के बीच बोलना चाहिए ।

इसको श्रद्धा से उच्चारण करने से हमारे सभी पापों का तो क्षय होता ही है । हमारे प्रियजन अर्थात सांसारिक

सम्बन्धी जो बाहर गये होते है शाम को वापस घर आते है। उन सभी पर प्रभु कृपा करें। और अपने कार्य में सफल हो कर घर वापस प्रसन्न लौटे। उनका सर्व प्रकार से कल्याण हो यही आशय है।

'सारांश' प्रभु का नाम चाहे किसी भी रुप में लें, किसी भी क्षण उसे भूलें नही। उसकी कृपा को सदा अनुभव करें।

राम जो राम राम।

शाम की चाय सर्व कल्याण हेतु
Evening Tea for Welfare

(संध्या वंदन)

कर कृपा प्रभु दीनदयाला, तेरो ओट पुर्ण गोपाला।

पहली सन्धया तारणी, तार माता तारणी
सगले दुख निवारणी।

चार पहर मेरे घर का धन्धा। एक घड़ी श्री राम को।
एक घड़ी आधी घड़ी, आध घड़ी परवान है।
सच्चा श्री भगवान है, गोपियाँ दे विच कान्ह है।
राधे रुकमीण राधे रघुवीर,श्री राम जी आए लंका जीत।
हनुमान का गीट कड़ा लक्ष्मण का ज़जीरे।

क्रमश;

जब तलक जिन्दगी होगी, फुरसत न होगी काम से।
कुछ समय ऐसा निकालो, प्रेम कर ले श्री राम से।

दो बातों को भूल मत, जो चाहे कल्याण ।
नारायण एक मौत को, दूसरा श्री भगवान ।
नीच अनाथ अजान मैं, निरगुण गुण हीन ।
नानक को कृपा भई, दास आपना कीन्ह ।
सत वचन साधु कहहि, नित जपहि गोपाल ।
सिमिर सिमिर नानक तरे, हरि के रंग लाल ।

(व्याख्या)

यह जीव अनेको अनेक योनियो से भ्रमता हुआ आया है ।

कई जन्म भये कटि पतगा, कई जन्म गज मनि कुरंगा
(गुरुवाणी)

बड़े भाग्य मानुष तन पावा, सुर दुलर्भ सद ग्रंथन गावा ।
रामायण ।

परन्तु जब इसे मनुष्य जन्म मिला तो प्रभु कृपा से सतसंग भी मिला तो यह जागा और अपने मालिक से बोला। हे प्रभो । मै भटकता हुआ आपके द्वार आया हुं, मुझे अबमु अपनी शरण मे ले लो । इस माया के अन्धकार से निकाल कर अपने चरणो मे लगा लो । ऐसी कृपा करना कि ससार के जितने भी माया के सुख है इन्हे मै अपने मन में जगह न दूं और अन्दर से सदा आप का नाम संभालता रहु जैसे बच्चा खिलौनों से खेलता है परन्तु माता पिता का साथ लेने ।

प्रभु लावो अपनी चरणी

प्रभु लावो अपनी चरणी प्रभु लावो अपनी चरणी
आये अनिक जन्म भ्रम शरणी प्रभु लावो अपनी चरणी
प्रभु लावो
उधर देह अन्धकूप ते प्रभु लावो अपनी चरणी
प्रभु लावो

सुखसम्पति माया रस भीठे एह नहीं मन में धरणी
प्रभु लावो

के बाद वह उन खिलौनों से झट से अलग हो जाता है मुझे ऐसा न हो कि

"दात प्यारी विसरिया दातार" जब जीव अपना आप अपने प्रभु के आगे Surrender कर देता है तो उसे एक Satisfection सी मिलती है। जैसे इस शब्द के द्वारा कह रहा है ज्ञान धयान कर्म आदि तो मुझ में कुछ नही और नही मेरे कर्म भी उतम हैं ।

परन्त हरि नाम से, सन्तों के दर्शन से मुझे तृप्ति आती है क्योंकि संसार के जितने भी पदार्थ है वह अस्थिर और संतों का संग प्रभु प्रेम यह जन्म जन्मान्तरों तक हमारा साथ देने वाली हैं।

"कचड़या सिऊं तोड़ ढूँढन साजन सन्त पक्किया"
(गुरुवाणी)

ज्ञान धयान किछु कर्म न जाणा । नाहिन निर्मल करणी
प्रभु लावो

हर दर्शन तृप्त नानक दास पावत हरि नाम रंग आभरणी
प्रभु लावो

※※※

व्याख्या (राखा एक हमारा स्वामी)

गुरुवाणी कहती है कि जब सतगुरु ने मुझे यह मन्त्र दृढ़ाया कि मेरा रखवाला सदा मेरे साथ है तो मैं सर्वदा के लिए सुखी हो गया। जैसे हम किसी का सहारा ले लेते हैं। तो उस का नाम भी हमें शान्ति देता है सहारा देता है। इसी प्रकार जब हम गुरु से "राम नाम" का आश्रय ले लेते हैं हमें यह विश्वास हो जाता है कि मेरा राम मेरा रक्षक बन गया है इस लिए मै अब सुखी हुं। उठते बैठते सोते जागते हर समय उस नाम के द्वारा मेरा प्रीतम सदा मेरे साथ है। इस लिए घर में सुख अनुभव होता है और बाहर भी अन्दर भी और बाहर भी सुख है क्योंकि वह निर्भय हो जाता है जो गुरु मन्त्र को दृढ़ कर लेता हैं।

राखा एक हमारा स्वामी

राखा एक हमारा स्वामी, सगल घटा का अन्तरयामी।
उठत सुखिया बैठत सुखिया, भउ नही लागे जहाँ ऐसे बुझिया
राखा एक।
सोये अचिन्ता जाग अचिन्ता, जहाँ कहाँ प्रभु तू वरतंता।
राखा एक।

घर सुख वूलिया बाहर सुख पाया, कहो नानक गुरु मंत्र दृढ़ाइया ।

राखा एक ।

व्याख्या (ऊच अपार बेअन्त स्वामी)

कहते हैं प्रभु महिमा बहुत ही बेअंत है ।
तेरा यश गीता वेदो ने नेति नेति गाया है' (न इति न इति)
इसी प्रकार गुरु साहब कह रहे हैं ए मेरे मालिक तु बेअंत है और बहुत ही ऊंचा है अर्थात तुझे कोई नही पा सकता परन्तु जो तेरा नाम गाता है और सुनता है उस का भी उद्धार अवश्य हो जाता है क्योंकि आप के नाम से पशु और प्रेत आदि भी तर जाते है ।
परन्तु जो आप के नाम पर बलिहार जाते हैं वही तर सकते हैं । जैसे हम किसी पर बलिहार जाते हैं तो उस के प्रेम मे अपना सर्वस्व भुल जाते हैं । इसी प्रकार जो प्रभु प्रेम मे मस्ती पा जाते है वही इस भव सागर से तर जाते और अखंड शान्ति तथा सुख का अनुभव करते हैं ।

ऊंच अपार बेअन्त स्वामी

ऊँच अपार बेअन्त स्वामी, कौन जाणे गुण तेरे ।
गावते उधरे सुनते भी उधरे, बिनसहि पाप घनेरे ।
पशु परेत मुग्ध को तारे, पाहन पार उतारे ।
नानक दास तेरी शरणाई, सदा बलिहारे ।

व्याख्या (ऐसी मेरे लाल)

मेरा सांई प्रीतम प्यारा बड़ा गरीब निवाज है बे आसरों का आसरा है वह चाहेती एक गरीब अनाथ के सिर पर ताज रख दे और चाहे तो राजा को रंक बना डाले । मसकहि करे विरचि प्रभु, अजहि मसक ते हीन । अस विचार तज संशय, रामहि भजे प्रवीन ।

जिस को संसार नीच कहता है पागल समझता है भोला भाला कहता है उसी पर प्रभु मेरा प्यारा प्रीतम रीझ जाता है और नीचों को ही ऊँचा बना देता है जो उस की शरण में चले जाते है जैसे कि हम पिछला इतिहास देखते है कितने भी छोटी जाति के भक्त थे सब हरि शरण में जा कर भवसागर से पार हो गये जैसे नामदेव जी कबीर जी त्रिलोचन जी रविदास जी ऐसे ऐसे भक्त जो संसार की दृष्टि में अति नीच माने गये परन्तु राम नाम का आश्रय लेकर वह मुक्त अवस्था को प्राप्त हुए । हरि मेरा क्या नही कर सकता, परन्तु उससे प्रीति भी तो ऐसी हो ।

ऐसी मेरे लाल

ऐसी मेरे लाल ऐसी मेरे लाल, ऐ सी मेरे लाल ।
तुझ बिन कवन करे ।
गरीब निवाज गुसइयाँ मेरा, माथे छत्र धरे ।
ऐसी मेरे ।

जाँ क्रमे छोत जगत कऊ लागे तां पर तुही ढरै ।
नीचहों ऊँच करे मेरा गोबिन्दा, काहू ते न डरे ।
ऐसी मेरे ।
नामदेव कबीर त्रिलोचन सधना सैन तरे
कहे रविदास सुनो रे संत हो, हरि जीऊ ते सभ ही सरै
ऐसी मेरे

व्याख्या (ऐसी प्रीत करो मन मेरे)

इस मन को हर समय यह समझने का अभ्यास कर वाना पड़ेगा कि आठ पहर अपने राम को सदा साथ समझना,

"मन तू ज्योति स्वरुप है, अपना मूल पछाण ।

परन्तु ऐसा किस प्रकार हो जाय इसका उपाय भी साथ २ बता रहे हैं कि ऐ मन तू सदा राम नाम अपने अन्दर सींचते रहना । एक पल भी नहीं भूलना । जैसे हम पौधे को रोज थोड़ा पानी डालते हैं एक बार अगर घड़े भर के डाल दें तो सम्भव नहीं कि हमें जल्दी फल दें, इसी प्रकार सवेरे एक ही बार पाठ आदि कर लेने से हर समय राम नही अनुभव हो सकता, धीरे २ सारा दिन माप अभ्यास करना, हर कार्य प्रभु की सेवा समझना अन्दर से प्रीति सदा राम नाम से रखना यही सरल उपाय है जिससे संसार के कर्तव्य कर्म करते हुए भी हम अपने सच्चे मार्ग को प्राप्त कर सकते हैं । ऐसी प्रीति निरन्तर जोड़ने का अभ्यास करते २ सारे दुख दर्द भय भ्रम दूर होते जायेंगे और शान्ति पायेंगे ।

फिर कुछ सालों के बाद हमारे मन का झुकाव जब इस ओर ज्यादा हो जायेगा तो संसारिक रस अपने आप फीके लगने लगेंगे तभी हमने समझना है कि प्रभु ने अपना बनाना शुरु कर दिया है क्योंकि

जीवन मुक्त सो अखिये, मर जीवे मरेया।

जीते जी हम तन विकारों से विगत हो जाये तभी हमारी विजय है।

जिसने हमें संसार के सारे पदार्थ धन पुत्रादि, घर बाहर दिया है हमें अन्दर से उसी के बन के रहना चाहिए। अगर बीच का कुछ समय हमारा संसारिक कर्तव्यों में चला भी जाता है तो और फिर से हम साथ-२ नाम स्मरण होने लगता है तो बीच की समय भी Count हो जायेगा क्योंकि उसका नाम ही "टूटी गांड़न हार गोपाल है जब ऐसा अभ्यास हो जायेगा तो नया अनुभव होगा ? क्या

ऐसी प्रीत करो

ऐसी प्रीत करो मन मेरे, आठ पहर प्रभु जानूं मेरे।
मन में सोच हो हरि हरि नाम, अनदिन कीर्तन हरि गुण गान
ऐसी प्रीति ।
साची प्रीत हम तुम संग जोड़ी, तुम संग जोड़ अवर संग तोड़ी
ऐसी प्रीत।
तुम नही तोड़ो,तो हम नही तोड़े तुम संग तौड़ कवन संग जोड़े
ऐसी प्रीत।

जां की प्रीत गोबिन्द संग लागी, दुख दर्द भ्रमतां का भागी
ऐसी प्रीत ।
जां को रस हरि रस है आयो, सो अनरस नाही लपटायो
ऐसी प्रीत ।
जां का सब किछ तां का होय, नानक तांको सदा सुख होय
टूटी गांड़न हार गोपाल, सर्व जीआं आपे प्रतिपाल ।
ऐसी प्रीत ।

व्याख्या (एका टेक)

मेरे मन में ऐसा अनुभव हो गया है कि वह अखण्ड ब्रहमनायक अब मेरा सच्चा मित्र बन गया है इस लिए मेरा मित्र । जो कुछ भी कर रहा है । अच्छा ही कर रहा है । मेरा प्यारा मीत जिस को राम कहते हे वह अन्तरयामी है वह समरथ है पारब्रहम है और मेरा सच्चा मालिक है ।

कहते है कभी कभी जब हम नाम का आशय लेते हैं तो हमारें साथ बेपरवाहिया भी करता है । कभी कभी शारीरिक कष्ट परिवारिक कष्ट या दूसरी कोई कठिनाई आ जायेंगी । परन्तु साथ साथ पूर्ण गुरु का हाथ मेरे ऊपर होगा । इस लिए मेरा यह साधना स्थिर होगी ।

हमने तो केवल दास बन जाना है जैसें हमारे घरो मे दास काम करता । सारी चीजें सम्भाल कर भी रखता है परन्तु उस का किसी वस्तु से लगाव नही होता केवल अपने मालिक को प्रसन्न करने के लिए काम करता है इसी प्रकार साधक मन मे सदा अपने राम को धारण कर

के उसी के लिए सारे कतर्व्य कर्म करता हैं। इस से उस को आसक्ति भी नही रहती और बढ़ाई भी मिलती है सो ऐ मेरे मालिक ऐसा ही मुझे बनाना।

एका टेक

एकाटेक मेरे मन चीत, जिस किछ करना सो हमरा।
मीतकरे सोई हम माना मीत के कर्तब कुशल समाना।
एक टेक।
मीत हमारा अन्तरयामी समरथ प्रख पारब्रम्ह स्वामी।
एक टेक।
मीत हमारा बेपरवाह, गुरु कृपा ते मोहे असनाहा।
एक टेक।
हम दासें तुम ठाकुर मेरे, मान महत नानक प्रभु तेरे।
एक टेक।

(व्याख्या) (तूँ समरथ)

साधका हमे अशहू ने इष्ट देव को हाजिर नाजिर देखते हुए उसे तूँ करके सम्बोधित करता है और उससे बातचीत करता रहता है जैसा कि इस शब्द में गुरु साहब अपने राम से कह रहे हैं। ऐ मेरे राम। तू समरथ है और तू मेरा सच्चा स्वामी है यह संसार का सारा मेला आपके द्वारा ही चल रहा है और तूँ सब का अन्तरयामी है।

इस लिए मैंने तेरा सच्चा आश्रय ले लिया है और जो भी तेरी शरण में आ जाता है उस का उद्धार निश्चित

है करोड़ी पतित तुम्हारी शरण मेंआकरपावन हो गये।

शरणगति का मतलब ही यही है कि संसार की जितनी भी वस्तुएं हैं यह सब आप की हैं, इनसे मेरी attachment न हो और जो भी सुख आदि है यह सब आप की कृपा से ही है ।

और जो भी कुछ हो रहा यह सब आप की आज्ञा से ही हो रहा है । अगर मैं ऐसा हर समय समझ लूं तो मै आप की सत्यता प्राप्त कर सकती हू । ऐसी कृपा कर कें मुझें बुद्धि प्रदान करो और नाम रूपी निधान हर समय मेरें मन की तिजौरी में भर दो जिससें मैं अखंण्ड शान्ति का अधिकारी बन संकू ।

तु समरथ

तू समरथ तू है मेरा स्वामी,सब किछ तुम ते तू अन्तरयामी
पारब्रम्ह पूर्ण जन ओंट, तेरी शरण उधरे जन कोट ।
तू समरथ ।
जेते जीअ तेते सब तेरे, तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे ।
तु समरथ ।
जो किछ वरते सब तेरा भाणा, हूक्म बूझे सो सच समाणा
तू समरथ ।
कर कृपा दीजे प्रभु दान, नानक सिमरे नाम निधान ।
तू समरथ ।

व्याख्या (यही मनोरथ मेरा)

सन्त जन कहतें हैं कि सतसंग करते करते एक परिवर्तन आ गया है वह क्या? अभी तक तो भगवान सें संसार कें पदार्थ मांगा करते थे, ऐ देवी मेरी यह मनोकामना पूरी कर दें तुझें चुन्नी चढ़ाउगी परन्तु कामनाँए तो पूर्ण कभी न हुई अगर एक पूरी हुई तो दूसरी अधुरी रह गई। एक दिन संतो का संग हुआ। पुछा आप हर समय आनन्दमय प्रतीत होतें हैं, इसका क्या राज हैं बोले इस कें छ; राज है :-

(१) भगवान सें नाम के लिए कृपा मांगना।
(२) संसार कें सारें कतर्व्य हरि सेंवा समझ कर करना।
(३) रसना से हरि गुण गातें रहनें का अभ्यास
(४) प्रातः पहलें सतसंग करना संतो कीचरण रज लेंना।
(५) हरश्वास में राम राम बोलनें का अभ्यास।
(६) इसी को अपना सच्चा धन समझना और इसकी ही चिन्ता करनो ।

बस ऐसे अगर हमारा जीवन बन जायें तो आनन्द ही आनन्द हैं। अहम् तो अपनें आप मिटता चला जायेंगा। जो सब दुखो का कारण हैं। सब राम ही राम हो जायें अन्तर बाहर एक ही हो जायें।

"अब राम मुझ में और मैं राम में हू"
(स्वामी रामतीर्थ)

ऐहो मनोरथ मेरा

I

ऐहो मनोरथ मेरा प्रभु जी, ऐहो मनोरथ मेरा - २

II

कृपा निधान दयाल मोहे दीजे, कर संतन का चेरा ।
ऐहो मनोरथ ।

III

प्रातः काल लागहुँ जन चरणी निशवासुर दर्श पावहुँ ।
ऐहो मनोरथ ।

IV

तन मन अरप करुँ जन सेवा, रसना हरि गुण गाऊँ ।
ऐहो मनोरथ ।

V

सास - सास सिमरुँ प्रभु अपना, संत संग नित रहिये ।
एक आधार नाम धन मेरा आनन्द नानक एहो लहिए ।
ऐहो मनोरथ

(व्याख्या) (प्रभु मेरो इत उत सदा सुहाई)

इत का अर्थ है यह ससांर और उत का अर्थ है इसे छोड़ कर हमने जहाँ जाना है। हमारे पुराणो में आया है

"लख चौरासी भरम के मानुष्य जन्म लिया पाय
अब के भी हरि न भजा तो लख चौरासी जाय"

गुरुवाणी में

"कई जन्म भये कीट पतगा, कई जन्म गज मीन कुरंगा" ।

से इस मनुष्य जन्म मे ही हम उस परम शक्ति को प्रकट कर सकते है। केवल उस के गुण गा गा कर परन्तु कितने गुण गाये उतने ही थोड़े है।

वह हमे खेल खिलाता हैं,लाड देता है संसारिक पदार्थ दे कर लाड लडाता है। और अपना नाम दे कर आनन्द देता है। अपने दास की प्रतिपालना माता पिता की तरह करता है। अगर उसका दास माया मे जाने लगता है तो किसी न किसी तरह उसे छुड़ा लेता है। इस लिए दास को आदत हो जाती है कि वह उस के नाम के बिना एक निमिष मात्र भी नही रह सकता, संतो के संग द्वारा नाम मे मगन अवस्था प्राप्त कर के प्रतिदिन लग्न बढ़ाकर अपना जीवन सफल कर लेता है।

प्रभु मेरा इत उत सदा सहाई

I

प्रभु मेरो इत उत सदा सहाई - २

II

मनमोहन मेरे जीय को प्यारो, कवन कहा गुन गाई।
प्रभु मेरो।

III

खेल खिलावे लाड लडावे, सदा सदा अनदाई।
प्रभु मेरो।

IV

प्रतिपाले बारिक की न्यांई, जैसे मात पिताई।
प्रभु मेरो।

V

तिस बिन निमख नही रह सकिये, विसर न कबुहुँ जाई।
प्रभु मेरो।

VI

कहो नानक मिल संत संगत ते मग्न भये लिव लाई।
प्रभु मेरो।

व्याख्या(राम रंग कबे उतर न जाये)

माया का रंग जीव पर चढ़ जाता है क्योंकि वह निरन्तर माया मे ही रहता है। परन्तु इस रंग का अन्त दुख है। इस के विपरीत संतो का संग कर के जो अपने मन पर कन्ट्रौल करके राम रंग चढ़ा लेते है उनका अन्त बहुत आनन्द मय होता है और वास्तविक बिजय तो वही है। जो "अन्त गत : सो मत :" परन्तु यह कैसे हो ?

अपने मन को राम के रंग मे रंग दो। राम नाम उच्चारण द्वारा अपने आप मन मे सच्चाई आती जायेगी। परन्तु इस के लिए नित्य प्रति का सतसंग आवश्यक है रोज का अभ्यास जरुरी है संत तो हमेशा यही समझायेगे कि राम नाम सिमरण के विना सुख नही मिलता।
"कौन वडा माया वडआई सोइ वडा जिन राम लिवलाई"
'वडे २ जो दीसै लोग तिन को व्यापै चिंता रोग।"
केवल गुरु की शरण में जाने से ही हम इस रंग को रंग सकते हैं।

राम रंग कदे उतर न जाये

राम रंग कदे उतर न जाये, गुरु पूरा जिस दे बुझाय।

I

हरि रंग राता सो मन साचा, लाल रंग पूर्ण पुरख विधाता
राम रंग।

II

संता संग बैठ गुण गाये, तां का रंग न उतरे जाये।
राम रंग।

III

बिन हरि सिमरन सुख नही पाया, आन रंग फीके सब माया
राम रंग।

IV

गुरु रंगे से भये निहाल, कहो नानक गुरु भये है दयाल।
राम रंग।

व्याख्या (कैसे मिलु अपने प्रभु से)

कभी कभी हमरा मन उदास हो जाता हैं सारे संसार के सुख होते हुए भी कभी कभी यह आत्मा अपने अन्तर मे ही किसी चीज को कभी महसूस करतो है, क्योंकि यह परमात्मा का ही अशं है और उसी से बिछुड़ कर आई है।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुख राशि
(रामायण)

राम रंग कदे उतर न जाये

राम रंग कदे उतर न जाये, गुरु पूरा जिस दे बुझाय।

I

हरि रंग राता सो मन साचा, लाल रंग पूर्ण पुरख विधाता
राम रंग।

II

संता संग बैठ गुण गाये, तां का रंग न उतरे जाये।
राम रंग।

III

बिन हरि सिमरन सुख नही पाया, आन रंग फीके सब माया
राम रंग।

IV

गुरु रंगे से भये निहाल, कहो नानक गुरु भये है दयाल।
राम रंग।

व्याख्या (कैसे मिलु अपने प्रभु से)

कभी कभी हमरा मन उदास हो जाता हैं सारे संसार के सुख होते हुए भी कभी कभी यह आत्मा अपने अन्तर मे ही किसी चीज की कभी महसूस करतो है, क्योंकि यह परमात्मा का ही अशं है और उसी से बिछुड़ कर आई है।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुख राशि
(रामायण)

राम रंग कदे उतर न जाये

राम रंग कदे उतर न जाये, गुरु पूरा जिस दे बुझाय।

I

हरि रंग राता सो मन साचा, लाल रंग पूर्ण पुरख विधाता
राम रंग।

II

संता संग बैठ गुण गाये, तां का रंग न उतरे जाये।
राम रंग।

III

बिन हरि सिमरन सुख नही पाया, आन रंग फीके सब माया
राम रंग।

IV

गुरु रंगे से भये निहाल, कहो नानक गुरु भये है दयाल।
राम रंग।

व्याख्या (कैसे मिलु अपने प्रभु से)

कभी कभी हमरा मन उदास हो जाता हैं सारे संसार के सुख होते हुए भी कभी कभी यह आत्मा अपने अन्तर मे ही किसी चीज की कभी महसूस करती है, क्योंकि यह परमात्मा का ही अशं है और उसी से बिछुड़ कर आई है।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी, चेतन अमल सहज सुख राशि
(रामायण)

तो यह प्रश्न करती हैं? मैं अपने प्यारे प्रीतम से कैसे मिलूँ ? कौन सा ऐसा संयोग हो कि मैं उस मे लीन हो जाऊँ , जीते जी ही, क्योंकि मर कर तो किसी ने नहीं बताया कि मैंने मुक्ति पाई तो इसी शब्द में रास्ता मिलता है निरन्तर चरण कमलों का धयान करो, भगवान का नाम, उसके मन्त्र चौपाइआं आदि सब चरण है इनका जप मानसिक तथा वाणी से खूब करो और कृपा मांगो बस इन्ही दो साधनो से अपने प्यारे से मिल जाओगे।

कैसे मिलु अपने प्रभु से

I

कवन संयोग मिलूँ प्रभु अपने,
पल पल निमख सदा हरि जपने।

II

चरण कमल प्रभु के नित धयावो,
कवन सुमत जित प्रीतम पावो।
कवन संयोग।

III

ऐसी कृपा करो मेरे, हरि,
नानक विसर न काहु वेरे।

व्याख्या(अब मोहे राम अपना कर जानिआ)

संसार मे जितनी भी वस्तुए हमारे सम्पर्क मे आती

है वह अपनी नही है, परन्तु उन्हे हमने अपना जान रखा है क्योंकि अगर वह अपनी हो तो हमारी मर्जी से हमारे पास रहें। नही, वह तो अपने समय अनुसार आती है,चली जाती है शरीर ही देखो अगर हमारा अपना हो तो हमारी इच्छा अनुसार जवानी अवस्था मे ही रहना चाहिए ऐसे ही बच्चे घर आदि सब अपनी अपने समय अनुसार परिवतर्न होते रहते है।

परन्तु आज हमने राम को अपना करके जान लिया, वह राम कौन हैं ? जो हमारे अन्दर रमण कर रहा उस का चिंतन शुरु किया।

यह सोने से भी नही तोला जा सकता भगवान को तो केवल मन दे कर अपना बनाया जा सकता है सो, कबीर जी कह रहे कि गुरु की कृपा से अब मेरा मन स्वच्छ हो गया, राम नाम जप मे लग गया हैं।

इस लिए जिस का ब्रहमा भी भेद नही पा सकते वह राम मेरे इस मन रुपी घर मे आकर बैठ गया है इसको क्या निशानी है कि राम जी आ गये है ? कि अब चचलता सारी खतम हो गई और केवल राम भक्ति ही मेरे भाग्य मे है अर्थात संसार का हर एक कर्म मेरें लिए राम भक्ति का ही अशवन गया है।

शब्द

अब मोहे राम अपना कर जानिआ,सहज सुभाये मेरा मन मानिआ ।

I

कंचन सिऊँ पाइये नही तोल,मन दे राम लिया हैं मोल ।
अब मोहे ।

II

ब्रम्हमे कथ कथ अन्त न पाया,राम भक्त बैठे अघ राया ।
अब मोहे ।

III

कहे कबीर चंचल मति त्यागी,केवल राम भक्ति निज भागी
अब मोहे ।

व्याख्या मेरे मन तन हर गोपाल

मै तो सर्वगुण हीन हू न जप है न तप हैन समय है न साधना है परन्तु आज उस सर्व शक्तिमान पिता ने मुझे अपना बना लिया है इस की क्या निशानी है कि प्रभु ने अपनाया है ? जब हमें सतसँग भजन कीर्तन आदि नाम जप आदि मे रस आने लगे तो समझो अब हमें भगवान ने अपना बना लिया है और राम जो इस मन रुपी मन्दिर में आ गये हैं वही अवस्था गुरु साहब प्रकट कर रहे है ।कि अब राम मेरे अन्तर प्रकट हो गये है ।

प्रभु व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम से प्रकट होय मै जाना ।
(रामायण)

भगवान का नाम भक्त वत्सल है उन्होंने अपनी कृपा से मुझे भक्तों की गणना में ले लिया है इस लिए संसार के सारे भय अब समाप्त हो गये हैं और संसार रूपी सागर से अब मैं पार हो गया हूं। जो पतित से पतित भी भगवत् शरणागति हो जाता है प्रभु अपने स्वभाव से ही उसे पावन कर देते हैं परन्तु शरणागति केवल सतो के संग से, नाम जप से, निष्काम कर्म से ही प्रकट होती है इस लिए जब यह सारे साधन किये तो नारायण प्रकट हो गये और सब दुख समाप्त हो गये।

मेरे मन तन हर गोपाल

I

मोहे निगुर्ण सब गुणे विहूणा, दयाधार अपना कर लीन्हा।

II

मेरे मन तन हर गोपाल सुहाया, कर कृपा प्रभु घर में आया
मोहे निगुर्ण।

III

भक्त वत्सल भये काटनहारे, संसार सागर अब उतरे पारे।
मोहे निगुर्ण।

IV

पतित पावन प्रभु विरद वेद लिखिआ, पारब्रम्ह मैं नैनों पेखिआ
मोहे निगुर्ण।

V

साध संग प्रगटे नारायण, नानक दास सब दुःख पलायण।
मोहे निगुर्ण।

व्याख्या हम मूर्ख मुग्ध अज्ञान

इस शब्द में अपने आप को मूर्ख क्यों कहा गया है? संसारिक दृष्टि मे भी उसी को मूर्ख कहा जाता है जो दूसरों की वस्तुओं को अपना समझ कर उन पर अपना अधिकार जमा ले और उन मे रम जाये इसी प्रकार जो भी भगवान की दी हुई चीजे जैसे यह जीवन, प्राण तथा सब सामग्री जो हमें उस परम पिता के द्वारा दान मे दी गई है, हम इन पर अपना अधिकार जमाने लग जाते है और आसक्त हो जाते है उस समय हम मूर्ख है, अज्ञानी है अविचारी हैं,परन्तु जो नाम की आशा धारण कर लेते हैं वह इस मुर्खता से छूट जाते है। इसी लिए जब नाम का प्रकाश होता है तो फिर जीव अपने आप को निगुर्ण तथा अनजान समझने लग जाते है और कर्ता धर्ता उस परम पिता परमात्मा को मानने लग जाते है और कभी कभी एकान्त में अपने प्रभु से वार्तालाप करते करते कहते है, हे प्रभु मै तो कुछ नही कर सकता न जप है, न तप है, न सब है। परन्तु तेरे नाम का ही निरन्तर हृदय मे आराधने का अभ्यास चाहता हूं। मैं तो कुछ भी नही जानता हे मेरे मालिक। मुझे तो केवल तेरा ही आसरा है। मेरी मति भी थोड़ी है जो आप के गुणानुवाद गा सके जो आपकी महिमा का अन्त पा सके मुझे तो केवल तेरा ही आसरा है।

"तेरी ओट पूर्ण गोपाला।"

हम मुर्ख मुग्ध अज्ञान

I

हम मूर्ख मुग्ध अज्ञान अविचारि,नाम तेरे की आस मन धारी

II

उदत सियाणप किछु न जाणां, दिनस रैन तेरा नाम बखाणां
हम मूर्ख ।

III

मोहे निगुर्ण गुण नाही कोय, करन करावन हार प्रभु सोये
हम मूर्ख ।

IV

जप तप संयम कर्म न साधा, नाम प्रभु का मन ही अराधा
हम मूर्ख ।

V

किछ नही जाणाँ मत मेरी थोड़ी, बिनवंत नानक ओट प्रभु तेरी
हम मूर्ख ।

व्याख्या (कर कृपा कृपाल)

कहते हैं जब बर्तन खाली होता है तभी उस मे हम कोई ओर वस्तु डाल सकते है, इसी लिए इस शब्दकें द्वारा हमने पहले अपने प्रभु प्यारे से प्रार्थना की हे प्रभु पहले हमारे सारे अवगुण क्षमा करो फिर हमे सदा सदा नाम जपनें की बखशिश करो ।

हमारे मन तन में अपने नाम की धारा निरन्तर वहा

दो ताकि उस धारा मे हमे संसार की और कोई भी विपति विघन डाल सके, यह निरन्तर नाम अभ्यास करे, और यह केवल निरन्तर सन्तों के संग से ही प्राप्त हो सकता है और मेरी अहम् भी इसी से नाश हो सकती है।

हे प्रभु आप के गुण गाती रहुं सदा सतसंग मे धयान हो अन्दर से सदा सत की शक्ति से जुड जाऊं फिर ऐसे प्रतीत हो कि हर कण कण में तेरा ही निवास है क्योंकि गुरु कृपा से अब सत्यता को जान लिया है।

हे प्रभो ? दया करना अपनी सिफत देना, अपनी बढ़ाई देना और केवल आप के दर्शन मे ही मुझे सन्तुष्टी मिले।

आह ? ऐसी अवस्था हो गई तो तभी इस मनुष्य जन्म मिलने की सार्थकता है नही तो पशु जीवन है। दाता जी कृपा करना।

कर कृपा कृपाल

I

कर कृपा कृपाल आपे बख्श लै,
सदा सदा जपी तेरा नाम सतगुरु पांई पै।
कर कृपा।

II

मन तन अन्तर बस दुखां नास होई,
हथ दे आपे रख व्यापे भऊ न कोई।
कर कृपा।

III

गुण गावां दिन रैन एते कम लाये,
संत जना के संग होमे रोग जाये।
कर कृपा।

IV

सर्व निरन्तर खसम एको रवि रहया,
गुरु प्रसादि सच सचौ सच लहया।
कर कृपा।

V

दया करो दयाल अपनी सिफ्त दे,
दर्शन देख निहाल नानक प्रति ऐह।

व्याख्या (कवन गुण प्रानपति मिलू मेरी माई)

एक ही माई ने सारे जगत की रचना कर डाली क्योंकि मनुष्य देखो तो सारे एक जैसे ही तो दिखते हैं परन्तु फिर भी अलग अलग हैं अन्तरात्मा तो सब को एक ही है सो यह भी आत्मा ही कह रही है ऐ मेरे प्राणपति मैं आप से कैसे मिल जांऊ, आत्मा का न रूप है न रंग है न बुद्धि है निराकार है और दुर से आ कर इस माटी के बर्तन मे स्थिर हो गई, यह परदेसन है क्योंकि पता नही कब यहाँ से निकल पड़े।

परन्तु जिन आत्माओं को सच्चे संतो का संग प्राप्त होने लग जाता है वह जागने लग जाती है उन में कुछ वेदना कसक उत्पन्न होने लग जाती है जो अन्त तक उन्हे

आत्मा परमात्मा में लीन होने को बाध्य कर देती है।

"ज्यों जल जल में आये खटाना,
त्यों ज्योति संग ज्योति समाना"

परन्तु इस के लिए पहले वैराग्य ज्ञान तथा भक्ती का मेल अवश्य होना चाहिए और अपने प्रियतम के मिलने की प्यास भी होनी चाहिए जब यह प्यास लगेगी तो सच्चे संतो का संग भी अवश्य मिलेगा यह जलन केवल सतसंग मे ही और लग सकती है और मिट सकती है।

कवन गुण प्राणपति मिलूं मेरी माई

I

कवन गुण प्रानपति मिलूं मेरी माई,
मिलु मेरी माई - मिलूं मेरी माई।

II

रुपहीन बुद्धि बल हीनी,
मोहे परदेसन दूर ते आई।

कवन गुण

III

नाहिन दर्व न यौवन माती,
मोहे अनाथ को करो समाई।

कवन गुण

IV

खोजत खोजत भई वैरागन,
प्रभु दर्शन को हऊँ फिरत तैसाई।

कवन गुण

V

दीनदयाल कृपाल प्रभु नानक,
साध संगत मेरो जलन बुझाई ।

कवन गुण

व्याख्या (क्या माँगू ?)

क्या माँगे अपने प्रभु से, सतो के पास गये, तो मांगने की युक्ति बताई साथ साथ उदाहरण दिये कि माया के पदार्थ मांगने से न तो मुक्त हो सकते है और न ही सन्तुष्ट हो सकते है ।

"तृष्णा न बूझो बहु रंग माया,नाम लेत सर्व सुख पाया,,

रावण के घर सब कुछ होते हुए भी उसे दुर्गति मिलते मिलते राम के दर्शन हो गये तो सद्गति भी हो गई इसी प्रकार अगर यह जीव सारे संसार के पदार्थ भोगते हुए साथ साथ सिमरण भजन सेवा सतसंग का आश्रय रखता है तो अन्त मे सद्गति को प्राप्त हो सकता है ।

परन्तु जब तक गुरु को मत से हम अपना एक लक्ष्य नही धारण करते, अपने चित को अपने लक्ष्य पर स्थिर कर सकतें तब तक कुछ नही इस लिए इस शब्द मे कबीर जी कह रहे हैं ए माई लोई सब धर्मो का सार तो यही है जब तक हम अपना स्वर्स्व राम के लिए अर्पित नही करते तब तक हम मुक्ति नही प्राप्त कर सकते हैं

स्वर्स्व अपर्ण का मतलब ही यही है कि राम के द्वारा, राम के लिए, राम को अर्थात सारी विभक्तियां अर्पण कर

के रहें तभी मुक्त हो सकते है सारा व्यवहार ऊपर से होना चाहिए परन्तु अन्दर तार सदा राम नाम के साथ जुड़ी होनी चाहिए तभी जीवन सार्थक है।

क्या मांगू ?

I

क्या मागूँ किछ थिर न रहाई,देखत नैन चलियो जग जाई।

II

लंका सी कोट समुन्द्र सी खाई,तिस रावण घर खबर न पाई
क्या मागूं

III

इक लख पूत सवा लख नाती,तिस रावण घर दिया न बाती
क्या मागूं

IV

चन्द्र सूरज जां के तपत रसोई,बैसन्तर जां के कपड़े धोई।
क्या मागूं

V

गुरुमत रामै नाम बसाई,स्थिर रहे न कतहूँ जाई।
क्या मागूं

VI

कहत कबीर सुनो री लोई, राम नाम बिन मुक्ति न होई।
क्या मागूं

व्याख्या (दर्शन माँगू)

हम दर्शन प्रभु के तभी मांग सकते है जब सेवा करें, क्योंकि अधिकार और कर्तव्य साथ साथ रहते है इस शब्द मे गुरू नानक देव जी कह रहे है, ए मेरे मालिक, मैं तेरा दर्शन चाहता हूँ और आपकी सेवा से कौन कौन नही तर गया।

अब इस में नाम को महिमा वर्णन की गई है कितना भी नीच हो अगर अपने हृदय मे श्रद्धा भावना तथा सिमरण प्राप्त कर ले तो सारे संसार मे जाना जाता है क्योंकि भक्ति तथा लहसन कितना भी छिपाओ अवश्य प्रकट हो जाता है जैसे,कबीर दास, रविदास नामदेव आदि कितने ही नीच थे परन्तु उन का नाम अभी तक अमर है,कितना भी अनजान क्यों न हो नाम का आश्रय लेने से सारी सृष्टि उसके चरण धार के पोती है।

"चरण साध के धोये धोये पीवो,अरप साध को अपना जीओ"

संतो की कृपा से जब नाम जप आरम्भ हो गया तो राजा बेटा बन गया, यह मन जो जन्म जन्मान्तरो से सोया हुआ था जाग गया हरि भजन मीठा लगने लगा जिसके फल स्वरूप सारे रस फीके हो गये।

एक ही रस मे हर दम रस मानने लगा जीवन आनन्दमय हो गया, संसार के सारे दुख उस आनन्द में रसमय हो ग।

"दुख नाठे सुख सहज समाये, आनन्द अनद गुण गाये"

दर्शन मांगूं

I

दर्शन मागूं, मागूँ दर्शन मागूँ देह प्यारे,
तुमरी सेवा कउन कउन न तारे
मागूँ दर्शन

II

जिस नीच को कोई न जाने,नाम जपत ओह चहुँकुट माने
मागूँ दर्शन

III

जां के निकट न आवे कोई,सगलसृष्टि वाँ के चरण मल धोई
मागूँ दर्शन

IV

जो प्राणी काहू न आवत काम,संत प्रसादि तांको जपिये नाम
मागूँ दर्शन

V

साध संग मन सोवत जागे, तब प्रभु नानक मीठे लागे।
मागूँ दर्शन

व्याख्या (इहु धन मेरे हरि को नाऊ)

जैसे जवानी में कमाया हुआ धन बुढ़ापे के लिए आश्रय बन जाता है इसी प्रकार जवानी में की हुई साधना बुढ़ापे तक काम आती है जब नाम का अकुंर इस मन में डाल दिया जाता है तो यह धीरे धीरे बाकी अवगुणों की जड़े अपने आप काट देता है जिस से जीव अनन्त सुख का अनुभव करने लग जाता है।

कबीर जी कहते है हरि का नाम ही सच्चा धन है न तो मैं इसे गाठ में वधुगा और न इसे बेचूँगा (अर्थात भजन कीर्तन आदि जितना जोर जोर से करो उतना ही बढ़ता है) और मन में कोई लालसा न हो । मेरी खेती बाड़ी भी तो हरि नाम ही है क्योंकि नाम लेते लेते ही तो सारा काम करना है । तो तेरे लिए ही तो सब कुछ करना है । भक्त की हर एक वस्तु राम मय हो जाती है क्या माया , क्या पूंजी क्योंकि और दुतिया भाव तो रहता ही नही , सारे बन्धुप भाई सब राम मय ही दिखाई देते है ।

जो ऐसे रहते है माया मे रहते हुए हर दम हर क्षण राम में ही रमण करते रहते है हम तो उन के दास है ।

इहु धन मेरे हरि को नाऊ

इहु धन मेरे हरि को नाऊ,गांठ न बाँधु बेच न खांऊ

I

नांऊ मेरी खेती नाऊँ मेरी बाड़ी,भक्ति करुँ जन शरण तुम्हारी
इहु धन

II

नांऊ मेरी माया नांउ मेरी पूँजी,तुम्हे छोड़ जाना नही दूजी
इहु धन

III

नांऊ मेरे बन्धुप नांऊ मेरे भाई,नांऊ मेरे संग अन्त होई सखाई
इहु धन

माया मे जिस रखे उदास, कहे कबीर हऊँ तां को दास ।
इहु धन

व्याख्या (बिगड़ियो कबीरा)

कबीर जी मुसलमान होते हुए भी जब अपने गुरु द्वारा राम नम में लवलीन हो गये तो उन के परिवार के लोगों ने कहा कबीर तो बिगड़ गया है,अब तो यह सच के साथ लग गया है यह अब कही नही जाता,तो कबीर जी उतर देते है कि अगर सँतो के संग से कुछ बिगड़ता है तो बिगड़ने दो, क्योंकि पिछले इतिहास से पता चलता है कि संतो के सँगलगने से तो मनुष्य राम रुप हो जाता है क्योंकि संत तो प्रभु का ही रुप होते है ।

मोरे मन प्रभु अस विश्वासा,राम ते अधिक राम का दासा
(रामायण)

फिर उदाहरण देते हुए समझाते है कि जैसे छोटी नदी आ कर गंगा में गिर गई,तो वह गंगा ही बन गई,कोई दूसरा वृक्ष अगर चन्दन के साथ के साथ लग गया तो वह चन्दन ही बन गया, अगर तांबा पारस के संग लग गया तो सोना हो गया । अर्थात जैसी सगत तैसी रंगत ।

इस लिए कबीर जी कहते है कि मै सँतो का संग कर के राम का रुप बनना चाहता हुँ और अगर लगातार संतो का सँग करुँगा उन के वचन कमाऊंगा उन जैसा मेरा भी व्यवहार हो जायेगा तो मैं भी राम का रुप हो जाऊगा ।

बिगड़ियो कबीरा

I

बिगड़ियो कबीरा राम दुहाई,
साच भयो अन कतहि न जाई ।

II

गंगा के संग सरिता बिगड़ी,
सोई सरिता गंगा होई निबड़ी ।

III

चन्दन के सँग तरुवर बिगड़ियो,
सोई तरुवर चन्दन होई निबड़ियो ।

IV

पारस के संग तांबा बिगड़ियो,
सोई तांबा कंचन होई निबड़ियो ।

V

संतन संग कबीरा बिगड़ियो,
सोई कबीरा राम होई निबड़ियो ।

व्याख्या (मेरा वैद्य)

जैसे शारीरिक रोग डाक्टरों की दवाइओं से दूर होते हैइसी प्रकार मानसिक रोग भी गुरु की दवाई से (नाम) से ठीक हो जाते हैं इस लिए मेरा वैद्य गुरु है जो मुझे गोविन्द राम नाम रुपी दवाई दे कर अन्दर के सारे रोगों को दूर कर देता है और मुझे इन भ्रम रुपी संसारिक विघन बाधाओं से बचा लेता है । कहते है गुरु के नाम में इतनी शक्ति है कि वह तीनो प्रकार के दुखो से छुटकारा करवा सकता है

आधयत्मिक आधिभौतिक आदि दैविक क्योकि जब हमारा नाम के प्रति प्रेम बढ़ने लगता है तो हम शरीर से ऊपर उठ जाते है केवल आत्मा का ही सम्बन्ध रह जाता है इस लिए सब दुखो का नाश हो जाता है और हम सुखो के खजाने भर लेते है गुरु हमें ऐसे राम नाम के गोले में बन्द कर देते है कि संसार के दुख बाधाए रोग आते अवश्य है परन्तु टकराकर पीछे हो जाते हैं उन का प्रभाव नही होता जिन दुखो से ससार सारा व्याप्त है,

"सगल सृष्टि का राजा दुखिया,
हरि का नाम जपत होय सुखिया"

परन्तु अगर नाम की पुड़िया निरन्तर ली जाय तो कहते है सच्चे गुरु की क्या पहचान है जो केवल सच्चे नाम कीबात करें संसार की और कोई बात न करे हरि हरि राम नाम उस के मुख में हो राम सेवा उस के हाथ में हो

ऐसे संतो के केवल दर्शन मात्र से भी कल्याण हो जाता है। जीव निहाल हो जाता है।

मेरा वैद्य

I

मेरा वैध गुरु गोबिन्दा,मेरा वैध गुरु गोबिन्दा।
हरि हरि नाम ओषध मुख देवे,काटे जम के फन्दा।

मेरा वैध

II

तीनों ताप निवारन हारा,दुःख हन्ता सुख रास ।
तांको विघन न कोई लागे, जा को प्रभु आगे अरदास ।
मेरा वैध

III

ताती वाओ न लगई पारब्रहम शरणाई ,
चहुँ गिर्द हमारे राम कार,अब दुःख लगे न काई ।
मेरा वैध

IV

जन्म-जन्म के दुःख निवारे,सूखा मन साधारे ।
दर्शन भेटत होत निहाला,हरि हरि नाम उच्चारे ।
मेरा वैध

व्याख्या (अरदास)

आत्मा का सच्चा सांई तो परमात्मा ही है क्योंकि उसी से यह एक चिनगारी निकली थोड़ी देर के लिए इस मिट्टी के बरतन में आई और अच्छे कर्म करके फिर उसी में जाकर समा गई,परन्तु उस में समाने के लिए साधन की आवश्यकता है । साधन भी तभी हो सकता है जब कृपा हो और कृपा तभी होती है जब उस के आगे अरदास करें कि हे मेरे राम ऐसी कृपा करना कि सदा मैं तेरा धयान करू तु मेरी सदा रक्षा करता आया है, कर रहा है और करेगा ऐसा विश्वास है ।

यह संसार में जो कुछ भी आपने मुझे दिया है यह सब तो आपने मुझे अमानत के रूप में दिया है और तू ही

सब मैं समाया हुआ है। हे प्रभु मुझे ऐसी बुद्धि देना कि मै किसी की निन्दा न करूँ अगर कोई मेरी करे तो खुश होऊ कि वह मेरे सारे पाप धोकर अपने सिर पर गठरी उठाता जा रहा हैं, इस लिए अब मैं सारी चिन्ताए छोड़ दू और केवल तेरे चरणो संग लगा रहूँ।

अरदास

प्रभु पास जन की अरदास, तु सच्चा साई-३
मेरा तु सच्चा साई-२

I

तु रखवाला सदा सदा,हऊं तुध धयांई-३
प्रभु पास जन

II

जीअ जन्त सब तेरेआ, तूँ रहिया समाई - ३
प्रभु पास

III

जो दास तेरे की निन्दा करे,तिस मार पचांई
प्रभु

IV

चिन्ता छड़ अचिन्त रहो , नानक लग पांई
प्रभु

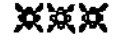

व्याख्या (अरदास)

दोय कर का क्या अर्थ है, कर से ही सारे कर्म किये जाते है इस लिए सारे कर्म इकठें कर के हे प्रभों आप को अपर्ण कर दिये, अब आप ही इन को स्वीकार करना, चाहे मेरे शुभ कर्म है, या अशुभ,मुझे तो कुछ मालुम ही नही, क्यो कि मै तो छोटा बच्चा हुँ आप मुझे स्वीकार कर लेना, बस ऐसी भक्ति में मुझे निरन्तर लगाये रखना कि सदा तेरा ही ध्यान हो।

अब जो भी कर रहे हो आप ही कर रहे हो आप के बिना तो दूसरा कोई है ही नही। अब तो मै केवल तेरा ही दास हूं,जो ऐसे तेरी सेवा करता है उस के आप सब काम पूर्ण कर देते हौ।

हे प्रभु मै आपकी शरण हुँ तुझ बिन मेरी कोन प्रतिपालना करे। ऐसी अवस्था हो गई है कि आप के सिमरण द्वारा आप मुझे जलथल कण कण में दिखाई देने लगे हो आप मेरे बहुत नजदीक हो गये हो।

अब मेरा भजन केवल लोगो को खुश करने के लिए नही है लोगो की चिन्ता भी नही है जब सच हृदय में समा गया है क्योकि ज्ञान रुपी रत्न जिस के हृदय में आ जाता है उस की दुरमति अपने आप समाप्त हो जाती है और वह परम पद का अधिकारी हो जाता है

इस लिए ए मेरे स्वामी ? राम प्यारे। दोनो हाथ जोड़ कर प्रार्थना है मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करो अपनी

ऐसी भक्ति दो कि यह सदा ही आप का ध्यान करें
हर समय तुम्हारा चिन्तन हो, (हर कर्म तुम्हारी पूजा हो
ऐसे मेरा जीवन बदले) "कृपा करो मेरे साईं"

अरदास

I

दोय कर जोड़ करुँ अरदास,तुध भावें तां आणों रास
कर कृपा अपनी भक्ति लाये,जन नानक प्रभु सदा ध्याये ।
दोय कर

II

कीता लोड़े सो प्रभु होय,तुझ बिन दूजा नाही कोय
दोय कर

III

जो जन सेवे तिल पूर्ण काज, दास अपने राखो लाज
दोय कर

IV

तेरी शरण पुर्ण दयाला,तुझ बिन कतन करे प्रतिपाला
दोय कर

V

जल थल महिअल रहिया भरपूरे,निकट वसे नाही प्रभु दूरे
दोय कर

VI

लोक पतिआरे किछु न पाइये, सांच लगे ताँ हऊमै जाइये
दोय कर

VII

जिसनू लाहें लहे सो लागे, ज्ञान रत्न अन्तर तिस जागे
दोय कर

VIII

दुरमत जाये परमपद पाये, गुरु प्रसादि नाम धयाये
दोय कर

IX

दोय कर जोड़ करूँ अरदास,तुध भावें तां आणें रास
दोय कर

X

कर कृपा अपनी भक्ती लाये,जन नानक प्रभु सदा धयाये
दोय कर

व्याख्या (पुकार)

जैसे ससारी लोग पद प्राप्ति के लिए पुकारते है परिश्रम करते है, लोगो को अपनी ओर आकिर्षत करते है ठीक इसी प्रकार भक्त जन भी सामूहिक रुप से भगवान को आवाजें लगाते है। सतो के संग बैठ कर आवाजे लगाने से मन अवश्य जाग जाता है फिर यह च्युत नही होता क्योकि जैसा जैसा हम सग करेगे वैसा ही रंग अवश्य चढ़ जायेगा इस लिए जिस जिस विषेषण से हम अपने प्रभु को पुकारेगे वैसी वैसी विदेषताए हमारे में आने लगेगी।

हे अच्युत - जो कभी च्युत नही होता

हे पारब्रहम - जिस का पार नही पाया जा सकता

हे अविनाशी - जिस का नाश नही होता
हे अपरम्पर - जिस को पार पाना कठिन है
हे संगी - जो सदा संग है
हे निरकांर - जिसका आकार कोई नही
हे समरथ - जो सब कुछ कर सकता है
हे गोविन्द - जिसने अपनी इन्द्रियो को वश में कर रखा है

ऐसे ऐसे नामो का उच्चारण कर के यह जीवात्मा अपने प्रभु के हृदय में समा जाता है जिस से यह परम गति को पा लेता है। गीता में भी तो यही कहते है कि
"अनन्यासचिन्त्यन्तो ये जन माम् परियोपेतास्ते,
तेषाम्मि युक्तानाम् (गीता) योक्षेभ व्याहमम्"।
अर्थात जो अनन्य मन से मेरा चिन्तन करते है उन को रक्षा तथा पालन मै स्वय ही करता हूँ।

पुकार

I

हे गोबिन्द हे गोपाल हेदयाल लाल,
प्रान नाथ अनाथ सखे दीन दर्द निवार।

II

हे समरथ अगम पूर्ण मोहे मया धार,
अंधकूप महा भयान नानक पार उतार।
हे गोबिन्द अधनास

III

हे अच्युत हे पारब्रहम अविनाशी अघनास
हे पूर्ण हे सर्वमय दूःख भजन गुण तास।
हे गोबिन्द

IV

हे संगी हे निरकार हे निगुर्ण सब टेक,
हे गोबिन्द हे गुण निधान जा कै सदा विवेक।
हे गोबिन्द

V

हे अपरम्पर हरि हरे है भी होवनहार,
हे संता के सदा संग निधारा आधार।
हे गोबिन्द

VI

हे ठाकुर हऊँ दास रौ मै निगुर्ण गुण नही कोई
नानक दीजे दान राखो हिऐ पिरोई।
हे गोबिन्द

व्याख्या (तू मेरे प्राण आधारे)

इस लिए जो हमारे प्राणो का आधार है उस को प्रकट करने के लिए पहले हमने नमस्कार दडवतवन्दना को फिर अनैको बार उस पर बलिहार हुए। फिर भी उसी से यही प्रार्थना की कि ए रामः अब मुझे यही वरदान देना कि मै उठते बैठते सोते जागते आप का ही ध्यान करूँ और अपना सुख दुख तथा अपना आप को ही अपर्ण कर दू क्योकि अब तो आप ही मेरी बल बुद्धि परिवार आप ही हो

इस लिए नाम प्राणो में करना चाहिए
ऊपर के श्वास में श्री नीचे के श्वास में राम को धुनि लगाते रहने का अभ्यास करना चाहिए जिस से जीवन में शक्ति मिले।

तू मेरे प्राण आधारे

I

प्रभु जी तू मेरे प्राण आधारे, प्राण आधारे-प्राण आधारे
तू मेरे

II

नमस्कार दण्डवत वन्दना, अनिक वार जाऊँ वारे
प्रभु जी

III

उठत बैठत सोवत जागत,एह मन तुझे ही चितारे
प्रभु जी

IV

सुख दुःख इस मन की वथा , तुध ही आगे सारे
प्रभु जी

V

तू मेरी ओट बल बुद्धि धन तुम ही, तुम ही मेरे परिवारे
प्रभु जी

VI

जो तुम करो सोई भल हमरे, नानक सुख चरणारे
प्रभु जी

VII

प्रभु जी तू मेरे प्राण आधारे,प्राण आधारे,प्रण आधारे
तू मेरे प्रण आधारे।

व्याख्या (राख पिता प्रभु मेरे)

हे मेरे प्यारे राम,रक्षा करो मै तो निगुर्ण हुँ मेरे प्यारे राम, यह सब गुण तो आप के ही है जिन्होने मेरे अन्दर अपनी ज्योति रखो है ।

यह पाँच चोर (काम क्रोध लोभ मोह अहकांर यह मुझे बहुत तंग करते है) मै गरीब, अनाथ, दास तुम्हारा आपको शरण आया हुं रक्षा करो । यह मूझे बारी बारी से सताते है इस लिए मुझे संतो ने बताया कि आप का नाम लेने से यह सब अपना प्रभाव नही डाल सकेगे । पहले तो मै हार गया अपना सारा जीवन इन्ही विकरो में गवां दिया परन्तु अब जब से आप की शरण आया हुँ ।

(१) आप के नाम जप का अभ्यास हुआ । श्री राम
(२) "कर कृपा मंत्र" का पाठ हुआ । श्री राम
(३) प्रभु का अपूर्ण आश्रय मिला । श्री राम
(४) लग्न लग गई प्यारे राम की । श्री राम
(५) तब से जीवन में परिवर्तन आ गया । श्री राम
(६) कि अब वह पांचो चोर जीत लिए । श्री राम
इस लिए मन में शान्ति आ गई, श्री राम

धनवान तरसते है जिसको, उस धन को मैंने पाया है ।

संतों ने ऐसा धन दिया है और उन्ही की कृपा से मैने उस धन को कमाया (अर्थात) जपा, कितनी बार मुंह से बोला

परिणाम क्या हुआ ?

यह पांचों चोर धीरे धीरे भागने लगे और परमपद जीते जी पा लिया।

"जीवन मुक्त सो आखिए, मर जीवे मरया"

जो जीता हुआ ही मर गया वही निर्वाण है, मरे हुए किसी ने भी मुक्ति नहीं पाई और न ही वर्ताई है।

"लोग मर कर स्वर्ग को जाते हैं,
उस स्वर्ग को मैंने पाया है"

राख पिता प्रभु मेरे

I

राख पिता प्रभु मेरे,राख पिता प्रभु मेरे।
मोहे निर्गुण सब गुण तेरे,राख पिता प्रभु मेरे।
पंच बिखादी एक गरीबा, राखो राखन हारे।
खेद करे और बहुत सतावे,आइयो शरण तुम्हारें।
राख पिता

II

कर कर हारियो अनिक बहु भान्ति, छोड़े कतहुँ नाही।
एक बात सुन ताकी ओटा,साध संग मिट जांही।
राख पिता

III

कर कृपा संत मिले,मोहे तिन ते धीरज पाया।
संतो मंत्र दियो मोहे निर्भय,गुरु का शब्द कमाया।

समान हो गया है कई लोग कहते है कि वह तो पत्थर हो गया जिसे सब कुछ बराबर है परन्तु रामायण यह भी तो कहते है।

"तरे पत्थर लिखा जिस पै रघुवर का नाम"
तेरो नैय्या किनारें पै क्यो न लगे। इस लिए अब मैं सदा, संतो के पीछे लगा हूं वही मुझे रोज ऐसा बनाने के लिए अभ्यास कराते रहते हैं।

हम ऐसे तू ऐसा माधो

I

हम ऐसे तू ऐसा माधो, हम ऐसे तू ऐसा,
हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा।
माधो हमऐसे

II

हम मैले तुम उज्जल करते,हम निर्गुण तू दाता,
हम मूर्ख तुम चतुर सिआणे,तू सर्व कला का ज्ञाता।
माधो हम ऐसे

III

तुम सब साजे साज निवाजे,जीउ पिड दे प्राना,
निरगुणीआरे गुण नही कोय,तुम दान देहो मेहरबाना।
माधो हम ऐसे

IV

तुम करो भला हम भला ना जाने,तुम सदा सदा दयाला।

तुम सुखदाई पुरख विधाते, तुम राखहु अपने बाला।
माधो हम

V

तुम निधान अटल सुलतान, जीअ जन्त सब जाचै।
कहु नानक हम इहै हवाला, राख संतन के पाछै।
ऐसे हम माधो।

व्याख्या (प्रभु कीजे कृपानिधान)

जिसके हम गुण गाते है वैसे ही हम वन जाते है माया के गुण गायें तो मायावी बन गये परन्तु संतो के संग से जब मन इधर मोड़ा तो राम रुप बनने शुरू हो गये, परन्तु यह गुण तो वही गा सकता है जिस पर प्रभु आप पूर्ण कृपा कर दे। बोलो।

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूरण गोपाला। (५) बार

छोटे बच्चे को अभी भाषा का ज्ञान नही वह तो ऐसे ही अपने राम से बोलता रहता है"कर कृप – – – – छोटे बच्चे की जैसे माता पिता अपने आप देख भाल करते है इसी प्रकार जब हम विनम् वन जायेगे उस के आश्रित रहेगे तो वह क्षण क्षण हमारी संभाल करता है।

बस अब तो और कोई ठौर ही नही जो आप देगे उसी में हम सन्तुष्ट है जहां आप रखे वही स्वर्ग है क्योंकि आप जो सदा साथ है परन्तु ऐसी अवस्था उसी को होगी जिस को राम जी को भक्ति अच्छी लगी लगेगी राम जी

भी उसी सें प्यार करते है जो भक्ति करता है बस ऐसे ही भक्ति करते करते वह अपनी अन्दर से तार अपने प्यारे राम के साथ जोड़ता जाता है और भवसागर पार हो जाता है।

परन्तु उस का द्वार कभी नही छोड़ना ऐसी पक्की लग्न लगानी है कि

"सारी खुदाई एक तरफ,
मेरा राम प्यारा एक तरफ"

जब ऐसी लग्न हो गई तो अपने आप अपने दास की लाज रखेंगे।

"जो शरण आवे,तिस कठं लावे एह विरदू स्वामी संधा"
(गुरुवाणी)

आता शरण मेरी वही,जाता सहज में पार है।
(गीता)

प्रभु कीजे कृपा निधान

I

प्रभु कीजे कृपानिधान,हम हरि गुण गावेंगे
हऊँ तुमरी करऊं नित आस,प्रभु मोहे कब गल लावेंगे
प्रभु कीजे

II

हम बारिक मुग्ध इग्रान,पिता समझावेंगे
सुत खिन खिन भूल विगार,जगत पित भावेंगे
प्रभु कीजे

III

जो हर स्वामी तुम देवो,सोई हम पावेगे
मोहे दूजो नाही ठौर जिस पे हम जावेंगे

प्रभु कीजे

IV

जो हर भावे भक्त,तिना हरि भावेगे
ज्योति ज्योति मिलाई,जोत रल जावेगे

प्रभु कीजे

V

हरि आपे होय कृपाल,आप लिव लावेगे
जन नानक शरण द्वार हर लाज रखावेंगे

प्रभु कीजे

व्याख्या (रामैय्या हऊं बारिक तेरा)

जैसे कबीर दास जी अपने रामैया(राम भी और मय्या भी) सब कुछ अपने राम जी को ही समझते हुए प्रार्थना करते है वैसे ही अगर हम भी अपने राम से कहे तो हमारी भी चंचल वृति शान्त हो जाये और मति हमारी विमल हो जाये

कबीर दास आदि जितने संत हुए उन्होने तो हमारे लिए, उदाहरण रुप में शब्द बनाये ऐ ससांरी लोगो आप भी ऐसे ही अपने राम से कहो और अपनें राम जी के ही हो जाओ

नाम की चिन्ता आप भी करो,क्योंकि राम नाम के बिना कोई भी नही पार कर सकता

"कर कर थाके वडे वडेरे,किनही न कीए काज माया पूरे" इस लिए हमे भी कबीर जी को साक्षी करते हुए अपने राम जी से प्रार्थना करनी चाहिए कि हम भी वह वैसी ही निमर्ल बुद्धि प्रदान करे धीरे धीरे हमारे मन मे गुण ही गुण उत्पन हो जाये ।

रामैय्या हऊं बारिक तेरा

I

रामैय्या हऊं बारिक तेरा,काहे न खंडस अवगुण मेरा
सुत अपराध करत है जेते,जननी चीत न राखस तेंते
रामैय्या हऊं

II

जे अति क्रोप करे कर धाया, तो भी चीत न राखस माया
रामैय्या हऊं

III

चित भवन मन परियो हमारा,नाम बिना कैसे उतरस पारा
रामैय्या हऊं

IV

देह विमल मत सदा शरीरा सहज सहज गुण रवै कबीरा
रामैय्या हऊं

व्याख्या (मोहे न विसारो में जन तेरा)

रविदास जी चमार थे परन्तु मन से सदा अपने राम प्यारे के गुण गाते रहते थे ।

चमार तो वास्तव में वह है जो ऊपर के शरीर को देखता है। अष्टावक्र पर जब राजा जनक के राजे महाराजे उन के (कुब्ज) टेढ़ा शरीर देख कर हंसे तो उन्होने कहा कि मै चमारो के समाज में आ गया हुँ। जो मेरे शरीर को देख कर हस रहे है ज्ञान ज्योति देखनी चाहिए,प्रेम देखनी चाहिए श्रद्धा देखनी चाहिए।

इस लिए कभी कभी हमे भी ऐसी प्रार्थना भी करनी चाहिए

हे राम मुझे विसार न देना

"सम्भव है झंझटो में,मै तुम को भूल जांऊ

"पर नाथ दया करना झट आ के छुड़ा लेना"

हे प्रभु ! अपनी ऐसी पकी लग्न लगाये तेरी प्रीति न टूटे यह शरीर तो आज या कल चला ही जाना है परन्तु आगे भी आप सग सदा रहे अब जल्दी आओ मिल जाओ"

मोहे न विसारो मैं जन तेरा

I

राम गुसैय्या जीअ के जीवन्ना,मोहे न विसारे मैं जन तेरा

II

मेरी संगत पोच सोच दिन राती,मेरा कर्म कुटिलता जन्म कुभान्ति राम गुसैय्या

III

मेरी हरो विपत्त जन करो सुभाई,चरण न छाडू शरीर कल राम गुसैय्या

कहे रविदास पड़ूं तेरी सांभा वेग मिलो जन कर नविलम्बा राम गुसैय्या

व्याख्या (प्रभु भक्त की निशानी)

जो प्रभु के चरणो में लग गये हैं उन का रहनसहन, कथन आदि सब बदल जाता है जैसे कि गुरु साहब ने फरमाया

कि प्रभु भक्त भी अपने शरीर को पालता है और अज्ञानी भी,अज्ञानी केवल शरीर के लिए पालना करता है परन्तु उधर ब्रहमज्ञानी, अन्दर जो हरि व्यापक है उसे समझने के लिए जानने के लिए,दर्शन के लिए पालता है ।

हृदय प्रभु चरणारविन्द,रसना जपत गोपाल
नानक तिस ही कारणो,इस देही को पाल

सो हरि भक्त की निशानी है

(१) अन्तर मन एक तार से प्रभु चरणो में ही लगा रहता है
(२) बाहर से तो सब के साथ बात भी करता रहता है परन्तु अन्दर अलिप्त रहता है
(३) मुख से बात भी होती रहती है अन्तर सिमरण भी चलता रहता है
(४) ऊपर से तो बहुत Personality वाला लगता है ओ परन्तु मन में नम्ता है ।
(५) जब पूर्ण गुरु से मेल हो गया तो राम रुप बन गया"

प्रभु भक्त की निशानी -: रहन सहन

I

साच नाम मेरा मन लागा,लोगन सिऊ मेरा ठाडा लागा

II

बाहर सूत सगल सिऊ मऊला, अलिप्त रहत जैसे जल में कऊला

III

मुख की बात सगल सिऊ करता,जीअ सग प्रभु अपना धरता

IV

दीस आवत है बहुत भयाला,सगल चरण की एह मन रवाला

V

जन नानक गुरु पूरा पाया,अतर बाहर एक दिखाया

व्याख्या (रामा जिऊ जानहु तिऊ तार)

इन शब्दों के द्वारा हम ऐसी भोली भाली भाषा में कह रहे है ए मेरे राम जैसे भी हो मुझे उभार लेन मै तेरी शरण में पड़ा हुँ केवल आत्मा को पुकार प्रभु तक पहुँचती है इस लिए आत्मा कह रही हे रामा जैसे भी हो इस ससार सागर में रहते हुए मुझे अलित्प रखना,जब तक आसक्ति नही कम होती तब तक इस मन को शान्ति नही चाहे हम सारे तीर्थो का स्नान कर आये

मन के हारे हार है,मन के जीते जीत

तो यही मन ही अपने प्रभु के चरणो में समपर्ण कर दिया। एक बहूत बड़ा सहारा अब पकड लिया है नाम का इस लिए आप ही वह मेरी प्रतिपालना करेगा और बन्धन मुक्त करेगा ऐसा विश्वास दृढ़ है।

देखते देखते सब पदार्थ तो बदलते जा रहे है फिर अपना क्या है सारा ही तो स्वपन मय है इस लिए मुझे अपनी ओर लगाओ और भ्रम मेरे काटो ।

रामा जिऊ जानहु तिऊ तार

I

रामा जिऊ जानहु तिऊ तार,मै तेरी शरण पड़ी
रामा जिऊ

II

अठसठ तीर्थ भ्रम भ्रम आइओ,मन नही मानी हार
मै तेरी शरण
अब यह दासी राम भरोसे,आप ही पाले आप ही पोसे
अब जम के फंदे निवार
मै तेरी शरण

III

इस जग में यहां कोई नही अपना,यह जग तो है केवल सपना
जीवन के दिन चार,
मै तेरी शरण

व्याख्या (जाँ पर कृपा दृष्टि अनुकूलता)

रामायण कहती है, जिस पर राम जी की कृपा रहती है उसे तीनो प्रकार के रोग नही व्याप सकते

इसी प्रकार गुरु वाणी में गुरु साहब भी कहते है कि सारा ससार रोगो से ग्रसत है । शरीरिक रोगो का तो

अन्त ही नही रोज नये रोग उत्पन्न हो रहे है परन्तु मानसिक रोग उन से भी ज्यादा भयानक है बाकी जीवो को तो एक एक इन्द्री का रोग है इस लिए मारे जाते है परन्तु यह मनुष्य जिस में पांचो इन्द्रियों का रोग है वह कैसे सुखी हो सकता है

मनुष्य केवल सुख प्रतीत करता है जब वह इन इन्द्रियो द्वारा सुख भोगता है परन्तु वास्तव में वह सुख है नही, वह तो केवल एक Coated fill की तरह है ऊपर थोड़ी सी मिठास है परन्तु अन्दर सें विष भरा पड़ा है

इस शब्द में सब के अलग अलग रोग बताये है (मनुष्य का रोग अहम्) (हाथी का रोग) (काम वासना) (पतंग का रोग द्रष्टि)मछली का रस और मोह के रोग में तो सारा संसार ही ग्रसत है, अपने बच्चों का मोह सारी चीजों का मोह उसे कोई भी वस्तु शान्ति से प्रयोग नही कर सकता।

तीनो प्रकार के रोगों में सारा संसार ग्रसित है (सात्विक राजसिक तामसिक)इन्ही रोगो में मरता तथा जन्मता रहता है विना सतगुरु की कृपा से यह रोग नही नाश हो सकते

जिस पर आप भगवान दया कर देते हैं उन्हे सच्चे संतो की प्राप्ति हो जाती है, फिर रोज रोज नाम के अभ्यास से प्राणी इन रोगो से मुक्ति पा लेता है इस लिए रोज भगवान से दया मांगनी चाहिए

जाँ पर कृपा दृष्टि अनुकूला

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,तेरी ओट पूर्ण गोपाला
जां पर कृपा दृष्टि अनुकूला,तांही न व्याप त्रिविध भवशूला

I

जो जो दीसे सो सो रोगी,रोग रहित मेरा सतगुरु योगी

II

हऊमै रोग मानुख को दीन्हा, काम रोग मैगल बस लीन्हा

III

दृष्टि रोग पत्र मुए पतगाँ, नाद रोग खप गये कुरंगा

IV

जीव्हा रोग मीन ग्रसआनो, वासन रोग भवन ग्रसानो

V

(मोह)हेत रोग का सगल संसारा,त्रिविध रोग महे वधे विकार

VI

रोगे मरता रोगे जनो,रोगे फिर फिर जोनी भ्मे

VII

रोग वध रहन रती न पखे,विन सत नुरु रोग कते न जावे

VIII

पारब्रहम जिस कीन्ही दया, वाह पकड़ रोगो कढ़ लियो

IX

तूटे वधन साध संग पाया कहो नानक गुरु रोग मिटाया

व्याख्या (सतगुरु होय दयाल ताँ श्रद्धा पूरिए)

सतगुरु की कृपा से सब कुछ हो सकता है परन्तु वह तभी दयालु होते हैं जब उन के वचनो का पालन किया जाये

उन्होंने एक ही वचन बताना है

नाम जपो निर्भय रहो, अंग न व्यापै पीर
जन्म मरण सशप मिटे,गावे दास कबीर

बस नाम जपते जपते जीव अपने आप ही सारे दुखो को भूल जाता है उस की सब इच्छाएँ भी अपने आप पूरी हो जाती है

फिर जम का भी डर नही क्योंकि"नाम लेत दूरो भागो"

(राम जी राम राम)

सतगुरु होय दयाल ताँ श्रद्धा पूरीए

I

सतगुरु होय दयाल तो श्रद्धा पूरिए,
सतगुरु होय दयाला तां कबहु न झूरिये

II

सतगुरू होय दयाल तां दुख न जाणिए,
सतगुरू होय दयाल तां हर रंग माणिए

III

सतगुरु, होय दयालतां जम का डर केहा
सतगुरु होय दयाल तां सद ही सुख देहा

IV

सतगुरु होल दयाल तां नवनिध पाइए
सतगुरु होय दयाल ता सच समाइये

व्याख्या (तू समरथ सदा)

एक दृष्टान्त है,कि कई तोते जाल में फसे हुए थे और दुखी थे एक सन्त वहां से गुजरे उन्हे दया आई उन्होने तोतों को यह मन्त्र रटवा दिया

(१)बहेलिया आयेगा
(२)कृपा करेगा
(३)हमे आजाद कर देगा
(४)हम उड़ जायेगे

सारा दिन वह ऐसे ही रटने लगे एक दिन वहेलिया आया आया उसे दया आ गई उसने सारे बधंन काट दिये वह हाल हम संसारी जीवो का है यह शब्द तथा भजन हमे केवल उन तोतो की तरह बोलने मात्र से हो, एक न एक दिन उस सर्व शक्ति मान पिता को दया आ जायेगी और वह हमारे बधंन काट देगा

"सतगुरु की ऐसी वडआई,पुत्र कलज विच ही गत पाई"

इस लिए हमे शब्द भजन आदि अवश्य जीहा के द्वारा तो उचारण करने ही चाहिए जैसे इस शब्द में प्रार्थना की गई है कि अपनी कृपा करो और इस मोह रुपी अन्धकार से निकाल लो, उड़ना तो सब ने है आज या कल परन्तु

धन्य है वह जो बधंन मुक्त हो कर उड़ जाते है और फिर इस आवागमन के चक्र में नही आते जो रोज शब्द भजन भजन मंत्र जाप चौपाइ आ आदि बोलते रहते है।

तू समरथ सदा

I

तू समरथ सदा, हम दीन भिखारी राम

II

माया मोह मगन,कढ लेहो मुरारी राम

III

लोभ मोह विकार बाधिओ,अनिक दोख कमावणो
अलिप्त बधंन रहत करता, किआ अपना पावने
तू समरथ

IV

करअनुग्रह पतित पावन, बहु जोनि भ्मते हारी
विनवंत नानक दास का,प्रभु जीअ प्राण आधारी
तू समरथ

व्याख्या (इक नाम देहु आधारा)

जैसे दिन के बाद रात अवश्य आनी है,जवानी के बाद बुढ़ापा तथा मृत्यु अनिवार्य है,जो विचार हम दिन में रखते है वही विचार रात को भी आते जाते रहते है और जो विचार हमारे युवावस्था में होगे बुढ़ापा मे भी वही आते रहेगे इस लिए,इस मन को हर समय हर क्षण जगा के

रखना है कि यह संसार के सब पदार्थ प्रयोग करते हुए भी इनमें आसक्त न हो ताकि अन्त समय में भी इसे अपने राम का ही ध्यान रहे

अपने मन को इन उदाहरणो से समझाओ

ए मेरी वाई गोविन्द नाम न विसारणा क्योंकि अगर तूने राम नाम विसार दिया तो धन में आसक्ति रह गई तो अगले जन्म में सर्प होगा,अगर तेरी ध्यान स्त्री में रह गया तो वेश्या योनि में जन्म होगा और अगर अन्त समय में बच्चो में ध्यान रहेगा तो सूअर की योनि मिलेगी,

इसी प्रकार अगर हमारा मन घर में आसक्त रहेगा तो प्रेत की योनि मिलेगी,गुरु कृपा से सत संग के अभ्यास से अगर अत समय में नारायण जी का ध्यान रहातो मुक्त हो जायेंगे, आवागमन के चक्र से छूट जायें।

इन सब का सारांश यह है कि हमें संसार को सब वस्तुओं का सेवन करते हुए भी मन में एक राम को नित निरंतर बसाये रखना चाहिए जिसने यह सारी वस्तुएं दी है

"दात प्यारी विसरया दातार न हो"

जहँ प्रसाद रंग रस भोग

नानक सदा ध्याइए ध्यावन जोग"

इस प्रकार से नित निरन्तर नाम जप सेवा सिमरण के द्वारा अपना जीवन मुक्त कर लेना चाहिए तभी हमारा मनुष्य जन्म लेना सफल है नही तो चौरासी लाख योनियों

के चक्कर काटने के बाद यह जन्म मिलेगा।

"राम जी राम राम"

(इक नाम देहु आधार)

शरण तेरी कट महा बेड़ी,इक नाम देइ आधार।
बिनवंत नानक कर देइ राखो,गोविन्द दीन हमारा।

शबद

I

गोविन्द नाम मत वीसरे री बाई,गोविन्द नाम मत वीसरे
अंत काल जो लक्ष्मी सिमरे, ऐसी चिता में जो मरे।
सर्प योनि वल वल अवतरे, — — गोविन्द

II

अंत काल जो स्त्री सिमरे,ऐसी चिता में जो मरे।
वेश्वा योनि वल वल अवतरे - - - - गोविन्द

III

अंतकाल जो लड़के सिमरे,ऐसी चिता में जो मरे
सूकर योनि वल वल अवतरे — — — — गोविन्द

IV

अंत काल जो मंदर सिमरे,ऐसी चिंता में जो मरे
प्रेत योनि वल वल अवतरे

गोविन्द नाम

V

अंत काल जो नारायण सिमरे, ऐसी चिंता में जो मरे,

वहति त्रलोचन ते नर मुक्ता,पीताम्बर वाके हृदय वसे ।

गोविन्द नाम

गुरु सेवा

सतगुरु पूरा मिले जो प्यारे,सो जन होत निहाला,
गुरु की सेवा सो करे प्यारे,जिसनो होउ दयाला"

(राम जी राम राम)

व्याख्या(अब मोहे जसो मन गायो)

पूर्ण सतगुरु की शरण में जाने के बाद का आनन्द ।

जब पूर्ण सन्तो का आश्रय मिला जीवन में आनन्द आ गया । अब दिन रात यह मन राम नाम का ही यश गाता रहता है,इस के फलस्वरुप मन में प्रकाश हो गया अर्थात मन में और वाधा नही महसूस होती, जब हृदय तक राम नाम Touch होने लगा तो एक अनूठा आनन्द प्राप्त हुआ, कि अब यह निश्चिन्त हो गया क्योकि अब यह विकार जो मेरे ऊपर पहले आक्रमण करते थे अब वह आते तो है थके थके से क्योकि नाम जप द्वारा अहम् का रोग नाश हो गया इस लिए यम दूत भी तो मेरा कुछ नही कर सकते

यम दूत का अर्थ बन्धन है जब हम किसी के मोह में बधे होते है तो दुखी होते है उस की ममता हमे बहुत दुख देती है परन्तु जब हम संतो की शरण के द्वारा एक राम

नाम को आधार बना लेते है तो सब बन्धन अपने आप खुल जाते है।

अब क्या परिवर्तन आ गया? अब हर कार्य हर समय अपने राम की ही सेवा लगती है क्योंकि गुरु जी ने यही सिखाया कि

"हर कर्म तुम्हारी पूजा हो"

इस लिए गुरु जी की आज्ञा शिरो धार्य कर के हम यम दुतो से छुट गये, जिन्होंने हमे स्वतन्त्र कर दिया उन गुरु पर हतकुरवाण जाते है क्योंकि अब हम गुरु कृपा द्वारा हर समय हरि यश "श्री राम" की धुनि लगाये रहते हैं कर कृपा का मन्त्र उच्चारण होता रहता है
जिस के फल स्वरूप सब पापो का साथ साथ हो क्षय होता चला जा रहा है

हमारे पर सदा भगवान ऐसी कृपा रखें

अब मोहे राम जसो मन गयो।

(कर कृपा प्रभु दीन दयाला, तेरी ओट पूर्ण गोपाला।)
सुख सागर प्रीतम मिले, उपजै महा आनन्द।
कह नानक सब दुख मिटे, प्रभु भेटे परमानन्द।

शब्द

I

अब मोहे राम जसो मन गायो।
भयो प्रगास सदा सुख मन में।

सत गुरू पूरा पायो - - - -अब

II

गुरू निधान रिद भीतर वसिया !
ता दुख भरम भउ भागा - - - अब

III

भई परापत वस्तु अगोचर ,
राम नाम रंग लागा - - - अब

IV

चिंत अचिंता सोच असोचा ।
सोग लोभ मोह थाका - - - - अब

V

हउ मैं रोग मिटा किरपा ते ।
जम ते भये विवाका - — - - अब

क्रमश :

VI

गुरू की टहल गुरू की सेवा,गुरू की आज्ञा भाणी ।
अब मोहें

VII

कह 'नानक' जिन जम ते कढ़िया, तिस गुरू के कुरबाणी ।
अग मोहे राम जसो मन गायो ।

VIII

सफल मूरत गुरू देव स्वामी,सरब कला भरपूरे ।
'नानक'गुरू पारब्रहम परमेश्वर,सदा सदा हजूरे ।
राम जी राम राम ।

शान्त भई व्याख्या

जब से आत्मा को गुरू के द्वारा नाम का भोजन मिला वह शान्त हो गई। नित्य प्रति राम नाम के उच्चारण से सभी पापो का विनांश हो गया।

'श्री राम'बोलने के निरन्तर अभ्यास से सभी रोग नष्ट हो गये व सर्व प्रकार से कल्याण हो गया।
यह अभ्यास नित्य प्रति संतो का संग प्राप्त करके हुआ। मन वचन कर्म से प्रभु का स्मरण करने से,अपने प्यारे राम की शरण में हो गई, समस्त विकार स्वयं ही भागने लगे उसके नाम की शक्ति अपरम्पार है।

सत,संतोष,दया,धरम,सिगार बनावहु।
सफल सोहागणि नानका, अपने प्रभु भावहु।

शब्द

शान्त भई गुरू गोविन्द पाई, ताप पाप विनसे मेरी माई।
राम नाम नित रसन वखान,विनसे रोग भई कल्याण।
पारब्रहम गुरू अगम विचार, साधु संगम है निस्तार।
निर्मल गुण गावो नित नीत, गई ब्याध उधरे जन मीत।
मन कर्म प्रभु अपना ध्याई,नानक दास तेरी शरणाई।
शान्त भई॥

(राम जी राम राम)

व्याख्या(नानक की तू टेक है)

कर कृपा प्रभु दीन दयाला, तेरी ओट पूर्ण गोपाला।

जब संतो का संग मिलने लग जाता है तो यह आवश्यक ही है कि हमारे राजा राम सहाई बन जाते है और हम जन्म मरण से छूट कर परम गति के अधिकरी हो जाते है,रोज संतो की संगत कर के पांच चोर(काम क्रोध लोभ मोह अहकार)भागने लग जाते है। और यह रसना नित निरन्तर अमृत नाम जपने लग जाती है यह दास बिना मोल ही अपने प्रभु के चरणो विक जाता है।

सत गुरु देव महाराज ने इस बन्धन युक्त जीव पर दया कर दी और इसे इस संसार से मुक्त कर दिया क्योकि अब दिन प्रति दिन अन्दर से प्रीति हरि चरणो में जुड़ती गई और बढ़ती गई। ज्यो ज्यो राम नाम की प्रीति बढ़ती है त्यो त्यो यह माया के रस अपने आप ही फीके लगने लगते है जिस से जीव आत्म सुख अनुभव करने लग जाता है मन में संतोष आने लगता है क्योंकि इस मन को नाम का आधार मिल जाता है।

फिर नाम मे लगे हुए जीव को हर समय कण कण में राम का अनुभव होने लगता है वह कह उठता है जिधर देखता हुँ उधर तूँ ही तू है।

अपनी भगति आप ही दृढ़ करने लग जाते है। क्योकि यह एक ही जन्म की करणी नही होती पिछले जन्मो से लगी हुई प्रेम भक्ति इस जन्म मै पनपने लगती है

और आगे भी इसे रास्ता मिलता है ।

कबीर जी के स्वामी तो गरीब निवाज है क्योंकि जब यह प्राणी गरीब अर्थात विनम् हो कर प्रभु के द्वार पर पड़ जाता है तो उसे वह अपना लेता है उस का स्वामी बन जाता है ।

नानक की तू टेक है

नानक की तूं टेक है, प्रभु तेरा आधार ,
करण कारण समरथ प्रभु,हरि अगम अपार ।

शब्द

I

अब मो को भये राजा राम सहाई,
जनम मरण कट परम गति पाई ।
साधु संगत दियो रलाई,
पंच दूत ते लियो छुड़ाई ।। अब मोको –

II

अमृत नाम जपहु जप रसना,
अमोल दास कर लीन्हो अपना ।

अब मोको

III

सत गुरु कीनो पर उपकार,
काढि लीन सागर संसार ।

अब मोको

IV

चरण कमल सिउ लागी प्रीत,
गोविन्द वसै निता नित नीत।

अब मोको

V

माया तपत बुझा अंधियार,
मन संतोष नाम आधार।

अब मोको

VI

जल थल पूर रह्यो प्रभु स्वामी,
जत पेखउ तत अन्तर्‌ यामी।

अब मोको

VII

अपनी भगति आप दृढ़ाई,
पूरब लिखित मिलया मेरे भाई।

अब मोको

VIII

जिस कृपा करे तिस पूरन काज,
कबीर को स्वामी गरीब निवाज।

अब मोको भये राजा राम सहाई

राम जी राम राम

व्याख्या(अपने गुरु ऊपर कुरबान

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।

अपने सांई पर जब तक कुरवाण नही जाते तब तक हम आनन्द का अनुभव नही कर सकते,हमारा सांई अलख है अपार है वह अगर थोड़ा सा भी हमारे मन में बस जाये तो हमारे दुख रोग विकार आदि सब नष्ट हो जायेगे। इस लिए राम नाम को निरन्तर हृदय में बसा कर सर्वस्व उस के अपर्ण हो तो कर देना चाहिए इसी में जीव का कल्याण है।

राम जी राम राम

(अपने गुरु ऊपर कुरबान)

अपने गुरु ऊपर कुरबान,
सांई सदा है मिहर बान।

शब्द

I

हउ वंजा कुरवाण सांई आपणे,
होवे अनद घणा मन तन जापणे।
सांई अलख अपार भोरी मन वसै,
दुख दरद रोग माइ सैडा हम नसै।

हउ वंजा

II

विंदक गाल सुनी सचै तिस धणी,
सुखी हुँ सुख पाये माइ न कीम गणी ।

हउ वंञा

III

नैन पसंदो सोइ वेख मुस्ताक भई,
मै निरगुण मेरी माइ आप लड़ लाइ लई ।

हउ वंञा

IV

वेद कतेब सँसार हभाहू बाहरा,
'नानक, का पात साह दिसै जाहिरा ।

हउ बेजा

व्याख्या (गुरु पूरा आराधिआ होए किरपाल)

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।

मै हर समय अन्दर तथा बाहरी आखों से भी अपने राम प्यारे को ही देखती रहती हूँ उस के अति रिक्त और कुछ भी दिखता नही जब उस का रंग चढ़ गया तो सारे भ्रम आदि नष्ट हो गये है ।

जैसें राम जी ने यह सारा खेल रचा कर भी आप इससे अलग रहते है इसी प्रकार अब मै भी इस संसार में रहते हुए भी इन सब से अलग रहना भी सीख गयी हूँ यह सब गुरु कृपा से मैने पाया है क्योंकि उन्होने मेरा सर्वस्व

ही तो ले लिया है।

यह सब कथन मात्र से नही होता केवल अगर हम रोज गीता रामायण आदि के पाठ कर भी लेते है परन्तु उनके वचनो के अनुकूल हमारा Practical जीवन नही होता तो पढ़ना भी व्यर्थ है जिस पर गुरू देव अपनी कृपा कर दे उस के हृदय में नाम समा जाता है क्योंकि उन के प्रेम मे इतना आर्कषण होता है कि हमारा मन स्वत : ही नाम मे लग जाता है इस लिए कबीर दास जो प्रसन्न चित रहते है क्योंकि वह हरदम अपने राम के रंग में रंगे रहते है।

गुरु पूरा आराधिआं, होए किरपाल

गुरु पूरा आरधिआ,होए किरपाल ।
मारग सांति बताया,तूटे जम जाल ।

शब्द

दुई दुई लोचन पेखा,हउ हरि बिन अवर न देखा ।
नैन रहे रंग लाई,अब बेगल कहन न जाई ।
हमरा भरम गया भउ भागा,जब राम नान चित लागा ।
बाजीगर डंक बजाई,सब खलक तमाशे आई ।
बाजीगर स्वाँग सकेला,अपने रंग रहे अकेला ।
कथनी कहि भरम न जाई,सब कथ कथ रही लुकाई ।

क्रमश

जाको गुरु मुख आप बुझाई,ताके हृदये रहा समाई
गुरु किंचित किरपा कीन्ही,सब तन मन हरि लीन्ही
कहै कबीर रंग राता,मिलिओ जग जीवन दाता

(१०.११.८१ का वाक मन्दिर में)

भये कृपाल गोपाला गोविन्द,
साध संग नानक बखसंद ॥

११.११.८१ का वाक (मंदिर में)

नानक गुरु खोये भ्रम भंगा,
हम ओइ मिब होए इक रंगा ॥

१२.११.८१ का वाक (मंदिर में)

रोम रोम में बसहिं मुरारि,
घट में है कृष्ण मुरारि ॥

राम जी राम राम

व्याख्या (तू ठाकुर तू साहिबो)

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला

जब एक शब्द"श्री राम"मन में बस जाता है तो फिर और कुछ भी यह जीव नही चाहता मन ही तो मन्दिर है जन और यही बड़ा तीर्थ है परन्तु इस में प्रभु

मिलन की वेदना भी तो हो खाली गाने से कुछ नही होता और वेदना भी किस की जो अगम है आगोचर है अलख होगी अपार होगी जब ऐसी अवस्था बन जाती है तब हमारी चिन्ता करना उस अलख अपार अन्तरयामी का काम है क्योंकि अब तो सारी मति, बुद्धि तथा मन चित सब उसी का हो गया है निरन्तर उसी की छाव है उसी आधीन है वह ही मेरा सर्वस्व है बस फिर क्या कमी हो

जो कुछ किया सो तूं किया मैं कुछ कीन्हा नाही
"मैंने भी तो तभी किया,जब तूं बैठा घट माही"

अब केवल तेरे नाम की ही चिन्ता है और कोई चिन्ता नही जो आप कर रहे हो अच्छा ही कर रहे हो बस मैं तो आप के आगे बेनती ही करती जाऊ और आप सुनते जाओ

"जो तुम करो सोई भल हमारे,नानक सुख चरनारे प्रभु जी

तू ठाकुर तू साहिबो

तूं ठाकुर तूं साहिब,तूं है मेरा मीरा
तुध भावै तेरी बंदगी,तूं गुणो गहीरा ।

शबद

तुझ बिन अवर न जाना मेरे साहिबा,गुण गावा नित तेरे
I
मन मन्दिर तन वेस कलन्दर, घट ही तीरथ नावा
एक शब्द मेरे प्राण बसत है, बहुड़ जन्म न आवा
तुझ बिन

II

मन बेधिआ दयाल सेती मेरी माई, कौण जानै पीर पराई
अगम अगोचर अलख अपारा, चिंता करो हमारी
तुझ बिन

III

जल थल महियल भरपूर लीना, घर घर जोति तुम्हारी
सीख मति सब बुद्धि तुम्हारी मन्दिर छावा तेरे
तुझ बिन

IV

जीअ जंत सब शरण तुम्हारी, सर्व चिंत तुध पासे
जो तुध भावे सोई चंगा, इक नानक की अरदास
तुध बिन

V

सुन स्वामी अरदास जन तुम अन्तर्यामी
थान थनंतर रवि रहे, 'नानक' के स्वामी
राम जी राम राम

व्याख्या (संता के कारज आप खलोया)

कर कृपा प्रभु दीन दयाला, तेरी ओट पूर्ण गोपाला

(भूमिका) संतो के कारज तो स्वयं पारब्रहम परमेश्वर आकर करता है। वह तो एक पैर से खड़ा रहता है, दम ही मूर्ख अज्ञानी उसे देख नही पाते, यादेखने की क्षमता नही है

जिसने पूर्ण रुप से उसके चरणों में अपने आप को (अर्थात आत्मा ने उसको ही अपना सर्वस्व समझन लिया) समर्पितकर दिया। उसकी समस्त इन्द्रियां कर्मेन्द्रियां भी

जब उसको समीर्पत हो गई, तो करने वाला वह स्वयं ही हो गया। हम केवल निमित्त मात्र ही है क्योंकि सभी कार्य शरीर द्वारा ही पूर्ण होते है। अतःकार्य करने वाला वह परमात्मा ही है - हम केवल उस की बेजान कठपुतली है उस पूर्ण पारब्रह्म अलख अविनासी जिसका यश वेंह पुराण भी गाने में असमर्थ है चरणों में वारम्बार प्रणाम है।

संता के कारज आप खलोया

धरति सुहावी सफल थान,पूरन भये काम।
भउ नाठा भ्रम मिट गया,रबिआ नित राम।

शब्द

संता के कारज आप खलोया,कम करावन आया राम।
धरत सुहावी ताल सुहावा, विचि अमृत जल छाया राम।
अमृत जल छाया पूरन साज कराया,सगल मनोरथ पूरे राम।
जय जय कार भया जग अंतर, लाथे सगल विसूरे राम।
पूर्ण पुरख अच्युत अविनासी, जस वेद पुराणी गाया राम।
अपना विरद रखिआ परमेश्वर,नानक नाम ध्याया राम।

सँता के कारज
राम जी राम राम

व्याख्या (शरणी आयो नाथ निधान)

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,तेरी ओट पूर्ण गोपाला

हे मेरे स्वामी,मैं आप की शरण में आन पड़ी हूँ बस मुझे नाम के दान से भरपूर रखना,मेरा मान रखना किसी के पास कोई मांगने जाता है तो उसे अवश्य दे दिया जाता है मुझे भी तीन चीजे निरन्त देते रहे

(१)संतो का संग

(२)निमल ज्ञान

(३)चरण कमलों का ध्यान

(४)नाम का रंग

(५)राम की सेवा

बस इन्ही का नाम लेते लेते मेरा जीवन बीते ।

शरणी आयो नाथ निधान

गुण निधार सुख सागर स्वामी, जल थल महियल सोई

जन 'नानक' प्रभु की सरनाई,तिस बिन अवर न कोई

शब्द

शरणी आयो नाथ निधान

I

नाम प्रीत लागी मन भीतर,मांगन को हरि दान ।

शरणी आयो

II

सुख दाई पुरण परमेश्वर,कर किरपा राखो मान ।

शरणी आयो

III

देहु प्रीत साधु संग स्वामी,हरि गुण रसन बखान ।

गोपाल दयाल गोविन्द दामोदर,निरमल कथा ग्यान ।

शरणी आयो

IV

'नानक को हरि के रंग रागो,चरण कमल संग ध्यान ।

शरणी आयो

व्याख्या (स्वामी शरण परियो दरबारे)

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,

तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।

खाली शरण में आये नहीं अब तो तेरी शरण में पड़े रहना है और जो आप की शरण में उक्त दो लाइनो के द्वारा आ जाता है उस के करोड़ो अपराध क्षमा हो जाते है अब तो बस तेरी ही शरण में पड़ी रहुँ मेरे गुरुदेव सब जगह खोजा तीर्थ आदि भी किये परन्तु शान्ति प्राप्त नही हुई परन्तु जब संतो का मिला नाम का रंग मिला चरणो की प्रीति मिली तो सारे मन के रोग समाप्त हो गये ।

"आनन्द ही आनन्द हो गया"

अनदो अनद घणा,

मै सो प्रभु डीठा राम

स्वामी शरण परियो दरबारे

तुँ बेअंत दयाला,तेरी शरणाई ।
गुरु पूरे ते पाइये,नाम वडियाई ।

शब्द

स्वामी शरण परियो दरबारे,स्वामी शरण परियो दरबारे ।

I

कोटि अपराध खंडन के दाते,तुझ बिन कौन उधारे ।
स्वामी शरण

II

खोजत खोजत बहु परकारे, सर्व अर्थ विचारे ।
स्वामी शरण परिओ

III

चरण कमल संग प्रीत मन लागी,सुरजन मिले प्यारे ।
स्वामी शरण
साध संग परम गति पाइए,माया रच वध हारे हारे ।

मेहरवान २ साहिब मेरा मेहरवान

मेहरबान मेहरवान साहब मेरा मेहरबान,
जिअ सगल को देओ दान ।
तुँ काहे डोले प्राणिआ,तुध राखेगा सिरजन हार ।
जिन पैदाइस तूं किया , सोई देइ आधारे ।
जिन उपाइ मेदनी , सोई करदा सार ।
घट घट मालिक दिलां दा , सचा परवदिगार ।

कुदरत कीम न जानिए , वडा बेपरवाह ।
कर बंदे तँ बंदगी , जिचरू घट में साह ।
तूं समरथ अकथ अगोचर,जिउ पिंड तेरी रास ।
रहम तेरी सुख पाइया , सदा नानक की अरदास ।
राम जी राम राम

व्याख्या (रोगी का प्रभु खंडहो रोग)

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।

आज सारा संसार रोगों से पीड़ित है (१) शरीरिक रोग,
इस लिए गुरू साहब अपने अकाल (२) मानसिक रोग,
पुरख परमेंश्वर से सब के लिए (३)अल्पायु मृत्यु के रोग,
प्रार्थना करते है जैसे वेद ने (४)मान अपमान के रोग,
सब के लिए प्रार्थना की (५) इर्षा दुख के रोग,
सर्वे भवन्तु सुखिन (६) अहम् का रोग ,
सर्वे सन्तु निरामया सर्वे भद्राणी पश्यन्तु माम् कश्चिद दुख भाग भवेत्त परन्तु यह सब रोग दूर कैसे हो?जब यह मन अपना स्थान ग्रहण कर ले और नाम की ओर मुड़ जाये निमाणा बन जाये सब भय से मुक्त हो जाये कितना भी कोई मूड़ हो परन्तु अगर उस को संग मिल जाये किसी चतुर का तो थोड़े ही दिनो में वह भी चतुर बन जाता है इस लिए जब हम रोज की प्रार्थना में अपने अवगुण की ओर ध्यान धरते हुए क्षमा माँगते है तो अवश्य ही हमारी

प्रार्थना सुनी जाती है और भार हल्का हो जाता है।

रोगी का प्रभु खंडहो रोग

रोगी का प्रभु खंड हो रोग, दुखिए का मिटावो सोग।
निरधन को तुम देवो धना, अनिक पाप जाए निरमल मना।
सगल मनोरथ पूरन काम, दास अपने को देवो नाम।
सफल सेवा गोपाल राइ,
करन करावन हार स्वामी ताते बिरथा कोई न जाई।
निथावै को तुम थान बैठावो, दास अपने को भक्ति लावहु।
निमाणे को प्रभु देवो माण, मूड़ मुग्ध होए चतुर सुजान।
सगल भयान को भउ नसै, जन अपने के हरि मन बसै।
पारब्रहम प्रभु सुख निधान, तत् ग्यान हरि अमृत नाम।
कर किरपा संत टहल लाए, 'नानक' साधु संग समाए।
राम जो राम राम

व्याख्या (सखी बस आया फिर छोड़ न जाई)

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला।

मेरें प्यारे राम की प्रीति एक बार जिसने लगा ली वह टूटती नही क्योंकि हमने अपना हाथ उसे पकड़ाया और कुछ नही किया शरण मे चले गये आगे पकड़ा उसने, इस लिए पकड़ने वाला तो समरथ है परन्तु उसे हाथ देने के लिए तीन साधन है—

(१)उधय

(२)सन्तो का संग
(३)मन्त्र जाप

बस यह तीन साधन करते करते अन्त तक हम उसकी कृपा मांगते रहे और पवित्र हो गये ।

दास कबीर यत्न से ओढ़ी,ज्यो की त्यो धर दीन्ही चदरिया।

सखी वस आया फिर छोड़ न जाई

I

"सखी वस आया फिर छोड जाई, ए प्रीत भली भगवन्ते ।

II

सुन सखिए मिल उधम करें हां, मनाए लए हरि कंते ।
सखी बस

III

मान त्याग कर भगत ठगौरी , मोहे है साधु सन्ते ।
सखी बस

IV

'नानक'जरा जन्म मरण भय नरक निवारे,
पुनीत करे तिस जंते ।
सखी बस

व्याख्या (सखी सहेली मेरे ग्रहस्थ आनन्द)

कर कृपा प्रभु दीन दयाला
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।

अब तो मेरे गृहस्थ में आनन्द ही आनन्द है क्योंकि सारा

संसार ही एक परिवार लगता है जब तक अपना पराया था तब हम अपने लिये तो रोते थें परन्तु दूसरों के लिए कुछ न था परन्तु अब तो एक ही हो गया है

न सुख है न दुख है
न हानि है न लाभ है

क्योंकि हानि तो केवल तभी है जब तू नही याद आता

(सखी सहेली मेरे ग्रहस्थ आनंद)

सखी सहेली मेरे गृहस्थ आनन्द,कर कृपा भेटे मोहे कतं ।

I

तपत बुझी पूर्ण सब आशा , मिटे अँधेर भया प्रगासा ।

II

मोहे दुहागण आप सँवारी , रूप रंग दे आप सँवारी ।
मिटियो दुख और सगल संताप , गुरू हीए मेरे माइ बाप ।

III

अनदह शब्द अचरज विसमाह , गुरु पूरा परसाद ।
जाको प्रकट भये गोपाल , ताके दर्शन सदा निहाल ।

IV

सर्व गुण ताके बहुत निधान,जाँ को सतगुरु दीओ नम ।
जाको भेटियो ठाकुर अपना,मन तन शीतल हर हर जपन ।

V

कहो 'नानक' जो प्रभु भाए, ताको रेण बिरला को पाए ।

राम जी राम राम

तुझ बिन दूजा नाही कोय

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।

शब्द

तुझ बिन दूजा नाही कोय, तुं करतार करें सो होय ।
तेरा जोरु तेरो मन टेक, सदा सदा जप नानक एक ।
सभ ऊपर पारब्रहम दातार, तेरो टेक तेरा आधार ।
हैत् हैत् हे.वनहार, अगम अगाधि ऊँच अपार ।
जो तुध सेवहिं तिन दुख नाही,गुरु परसादो नानक गुण गाई
जो दीसै सौ तेरा रूप, गुण निधान गोविन्द अरप ।
सिमिर सिमिर सिमिर जन सोई,नानक करम परापत होई।
जिन जपिआ तिसको बलिहार, तिसके संग तरे संसार ।
कह नानक प्रभु लोचा दूरि,संत जना की वांछउ धूरि ।
राम जी राम राम

प्रभु मेरें प्रीतम प्राण प्यारें

I

प्रभु मेरे प्रीतम प्राण प्यारे,
दयाल अनुग्रह धारे । प्रेम भक्ति अपनो नाम दीजै ।
प्रभु मेरे

II

सिमरौ चरण तुम्हारे प्रीतम, हृदय तुम्हारी आसा ।

संत जना पै करु बेनती,मन दरसन की प्यासा ।
प्रभु मेरे

III

बिछुरत मरण जीवन हर मिलते , जन को दर्शन दीजै ।
नाम आधार जीवन धन नानक , प्रभु मेरे कृपा कीजै ।
प्रभु मेरे प्रतम प्राण प्यारे ।
राम जी राम राम

व्याख्या (स्तुति गुरुदेव की)

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।

गुरु ब्रह्मा,गुरु विष्णु :,गुरु देवो महेश्वर : गुरु साक्षात् परं ब्रहम,तस्मै श्री गुरवेनमः

(गुरु ही ब्रहमा है गुरु ही विष्णु है गुरु ही देवीधदेव शंकर है ! गुरु ही साक्षात् पारब्रहम परमेश्वर हैं । अतः ऐसे गुरू गुरू को मैं बारम्बार नमष्कार करती हूँ)

"आदि गुरुवे नमः , जुगादि गुरुवै नमः
सत् गुरुवे नमः, श्री गुरु देवे नमः

संसार की रचना से पूर्व भी गुरु थे आज भी है कल भी रहेगे गुरु ने ही इस प्रथ्वी के समस्त भार को उठाया हुआ है अत आदि गुरु को युगों से भी पूर्व स्थित गुरु को सत्य रुप गुरु को देवो के देव गुरु को मै बारम्बार नमष्कार करता हूँ ।

राम जी राम राम

(स्तुति गुरुदेव की)

गुरु देव माता गुरु देव पिता,गुरु देव स्वामी परमेश्वरा ।
गुरु देव सखा अज्ञान भंजन,गुरु देव बंधुय सहोदरा ।
गुरु देव दाता हरि नाम उपदेसै,गुरु देव मंत्र निरोधरा ।
गुरु देव साँति सति बुधि मूरत, गुरु देव पारस परसपरा ।
गुरु देव तीरथ अमृत सरोवर,गुरु ग्यान मजन् अपरंपरा ।
गुरु देव करता सब पाप हरता,गुरु देव पतित पवित करा ।
गुरु देव आदि जुगादि जुग जुग,गुरु देव मंत्र हरि जय उधरा ।
गुरु देव संगत प्रभु मेलि कर किरपा,
हम मूड़ पापी जित लग तरा ।
गुरु देव सत गुरु पारब्रहम परमेश्वर,
गुरु देव नानक हरि नमस्करा ।

व्याख्या (गुरु का दर्शन)

कर कृपा प्रभु दीन दयाला,
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ।

चरण क्या है?गुरु के वचन ही चरण है उन का दिया न
दर्शन क्या?उन को सामने रखते हुए नाम लेना ही दर्शन
है गुरु की रेण क्या है - अपने आपको मिटा देना ?
हउमै क्या है - अहमता का भाव ।
पानी क्या ढोना है - गुरु की याद में आंसू बहाना ।
पीसना क्या है - गुरु के लिए ही सारे काम करना ।
नमस्कार क्या है - गुरू के चरणों में शीश रखना ।
क्योंकि गुरु समरथ है - गुरू के द्वारा ही सब कुछ हो
सकता है ।

गुरु का दर्शन

गुरु का दर्शन देख देख जीवां,
गुरु के चरण धोए धोए पीवां।
गुरु मेरे प्राण सतगुरु मेरी रास,
तिस गुरु को सिमरु सास सास।
गुरु मेरे प्राण सतगुरु मेरी रास।
गुरु की रेण नित मजन करऊ,
जन्म मरण की हउमै मल हरहु।
तिस गुरु को झुलावहुँ पंखा,
महा अग्नि ते हाथ दे राखा।
तिस गुरु के गृह ढोवउ पानी,
जिस गुरु ते अकल गत जानी।
तिस गुरु के गृह पोसऊ नीत,
जिस प्रसाद बैरी सब नीत।
जिन गुरु मोकऊ दीना जीउ,
अपना दासरा आपै मूल लीओ।
आपै लायो अपना प्यार,
सदा सदा तिस गुरु को नमस्कार।
वलि कलेश भय भ्रम दुख लाया,
कहो नानक मेरा गुरु समरथ।

गुर का दर्शन

शबद (आरती)

I

पिता मेरो बडो धनी अगमा,
पिता मेरो बडो धनी अगमा।
उसतत कवन करीजै करते,
पेख रहे विसमा — — — पिता मेरो

II

राजन में राजा तूं कहिये भूमन में भूमा,
ठाकुर में ठकुराई तेरी,कौमन सिर कौया।
पिता मेरो

III

सुखियन में सुखिया तूं कहिए दातन सिर दाता,
तेजन में तेजस्वी कहिए रसियन में राता।
पिता मेरो

IV

सूरन में सूरा तू कहिए भोगने में भोगी,
गृहस्थन में तू वडो गृहस्थी जोगन में जोगी।
पिता मेरो

V

दरबारन में तेरो दरबारा सरन पालन टीका,
लखमी केतक गनी न जाई गन न सकउ सीका।
पिता मेरो

VI

नामन में प्रभु तेरो नामा ज्ञानन मे ज्ञानी,

जुगतन में प्रभु तेरी जुगता इसनानन में स्नानी ।
पिता मेरो

VII

सिध्दन में तेरी प्रभु सिध्दा करमन सिर करमा,
आज्ञा में तेरी प्रभु आज्ञा हुक्मन सिर हुक्मा ।
पिता मेरो

VIII

जिउ बुलाने तिउ बोल स्वामी, कुदरत कवन हमारी ।
साध संग नानक जस गावै,जो प्रभु को अति प्यारी ।
पिता मेरो वडो धनो अगामा ।

आरती (सतगुरु की)

ऊँ जत सतगुर देवा जय सत गुरु देवा,
अपने भक्तों के संकट तुम दूर करो देवा ।
जय सत गुरु

तुम हो अलख अविनासी, तुम अन्तर्यामी,
तुम ही करता धरता तुम सबके स्वामी ।
जय सत गुरु

अपना रूप दिखाते कण कण व्याप रहे,
तेरी कृपा का मेरे प्रभु जो हर पल ध्यान रहे ।
जय सत गुर देवा

हर दम तुझको ध्याऊँ तेरे गुण गाऊ,
बार बार चरणों में तेरे मै प्रभु शीश नवाऊँ ।
जय सत गुरू देवा

V

घट में आप विराजो मन मन्दिर साजे,
बाजे अनहद बाजे जय श्री राम हरे,
जय सत गुरू

VI

जग मग ज्योति सुहावै रूप तेरा प्यारा,
श्वेत वर्ण उजियारा पिता है तुँ मेरा।
जय सत गुरू

VII

सब पर कृपा करो अब प्यारे गुरू देव,
क्षमा वरो सब तेरी ही सेवा।

VIII

तेरे द्वारे आई प्रभु जी, करना तुम रक्षा,
इक पल भी न विसरे नाम प्रभु तेरा।

बोलो सत गुरु की जय।

ऊँ सत गुरु देवा।

जय सत गुरु देवा।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विधा द्रविणम् त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव देव।
सर्वे भवन्त सुखिना सर्वे सन्त निरामया,
सर्वे भद्राणि पश्यन्ति मां कश्चि दुखभाग भवेत।

सब पर क्षमा करो भगवान,
सब पर कृपा करो भगवान,
सब जन लेवे तुम्हारा नाम,
सब जन करें तुम्हारा ध्यान ।

धर्म की – – – – जय हो
अधर्म का - - – – नाश हो
प्राणियां में – – – सद्भावना हो

हर हर महादेव

प्रार्थना

१) हे सर्व शक्ति मान पिता,हम आप के बच्चे हैं।
२) आप हमारी रक्षा करना।
३) हमें दुर्गणों से बचाना।
४) हमें सदगुण प्रदान करना।
५) हम क्रोध को "शान्ति से जीतें।"
६) लौभ को "सयंम से जीतें।"
७) मोह को "प्यार से जीतें।"
८) अहंकार को "विनम्ता से जीतें।"
९) पल पल में आपका ध्यान करें।
१०)हमारी द्वैत बुद्धि को मिटाना।
११)सबके घर में सुख शान्ति देना।
१२)रोगों का नाश हो।
१३) कलेशों का नाश हो।

बस यही प्रार्थना है।

स्वीकार करो स्वीकार करो स्वीकार करो।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति।

पहले प्रभु को सिमरिये, पीछे करिये काज,
काज सँवारेगे प्रभु,राखेगे तेरी लाज।

नमस्कार (प्रार्थना)

नमो कृष्णा भगवान वसो वजैया,
नमो कृष्ण संकट में धीरज धरैया।
नमो कृष्ण भक्तो के दुख के हरैया,
नमो नन्द नन्दन हमारे कन्हैया।
नमस्कार चरणों में आनन्द दाता,
नमस्कार सर्वस्व ज्ञाता विधाता।
नमो कृष्ण केशव कन्हैया बिहारी,
नमो कृष्ण गोविन्द मोहन मुरारी।
नमो कृष्ण अवतार धारी खरारी,
नमो भक्त वत्मल नमो धर्म धारी।
तुम्हारा ही भक्तों में भगवान बल है,
तुम्ही से सदा भक्त जीवन सुकल है।
सुजन दास जन के सुमन श्याम तुम हो,
दुखी दीन दुखियो के आराम तुम हो।
सदा सच्चिदानन्द घनश्याम तुम हो,
सकल विश्व के एक आधार तुम हो।
सुना हे तुम्हें दास जन जब सिमरते,
नही आप फिर एक क्षण धीर धरते।
दया कर दया मय सकल दुख हरते,

हृदय से लगा प्रेम से प्यार करते।
तुम्हारे ही बल से मगन भक्त रहते,
हरे कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण कहते।
प्रभो दासी को भक्ति का पय पिला दो,
मुझे मन के मन्दिर में दर्शन दिखा दो।
हरे कृष्ण श्री कृष्ण मुझ को रटा दो,
इसी नाम का चक्र मन मे चला दो।
रहे मेरे मन में अटल कृष्ण भक्ति,
मधुप मैं बनूं और कमल कृष्ण भक्ति।
लगा लूं लगन तुममें मुरली मनोहर,
रहूँ मै मगन तुममें मुरली मनोहर।
रखूं अपना मन तुममें मुरली मनोहर,
मिलूँ त्याग तन तुममें मुरली मनोहर।
प्रभो अब दिखे मुझको जीवन त्विवैया,
मुझे रट लगे श्री कन्हैया कन्हैया।

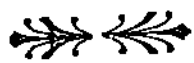

"हे प्रभु सदा हम पर प्रसन्न रहना"

नमामी नारायण दीन बन्धु

हरे मुरारे करुणा के सिन्धु,
हरो हमारे अघ नाथ सारे,प्रसीद देवेश जगन्निवास; ।
प्रसीद देवेश जगन्निवास,नमो वसु देवम देव वर प्रसीद ।
न नाथ विधा न बल है न शक्ति,
न बुद्धि श्रद्धान प्रधान भक्ति ।
प्रभो सहारा चरणाम्बुजो का,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
प्रसीद देवेश जगन्निवासः ,
नमो वसुदेवम देव वर प्रसीद ।
न तात माता न सुबन्धु भ्राता,
न पुत्र त्रातः अपना दिखाता ।
बिना तुम्हारे हरि कौन मेरा, प्रसीद देवेश जगन्निवास ।
प्रसीद देवेश जगन्विासः, नमो वसुदेवम् देव वर प्रसीद ।
तुम्ही पिता माता सुबंधु प्यारे,तुम्ही सुविधा धन हो हमारे।
सखे न रूठो अब मान जाओ, प्रसीद देवेश जगन्निवासः ।
प्रसीद देवेश जगन्निवास. नमो वसुदेवम् देववर प्रसीद : ।
किये अनेकों अघनाथ मैंने, विचार मेरा मन कांपता है ।
क्षमा करो पाप समस्त मेरे, प्रसीद देवेश जगन्निवासः ।
प्रसीद देवेश जपन्निवासः, नमो वसुदेवम् देव वर प्रसीद ।
ज्ञान अंजन गुरु दिया, अज्ञान अंधेर विनाश ,

हरि कृपा ते संत भेटिओ, नानक मन प्रकाश,
फिरत फिरत प्रभु आइयो, परिओ तउ शरणाइ ।
नानक की प्रभु बेनती, अपनी भक्ति लाई ।

वसुदेव वसुतं देवं, कंस चाणूर मर्दनं,
देवकी परमा नन्दम्, कृष्णम् वन्दे जगत गुरु ।।
मूकम करोति वाचालं, पगूं लंघयते गिरिम ।।
यदि कृपा तव अहम् बन्दे, परमानन्द माधवम् ।
वसुदेव वसुतम देवम् कस चाणूर मदर्नम ।
देवकी परमानन्दम्, कृष्णनम् बन्दे जगतगुरू ।
शरणागत को सुरतरू के सम, देते मन वांछित वरदान ।
कर में चाबुक लिए ज्ञान की मुद्रा धारै श्री भगवान ।
गीता रुपी ज्ञान दुग्ध के, दोहने वाले है सुख धाम ।
श्री कृष्ण चन्द्र आनन्द रुप हरि, बारम्बार तुम्हे प्रणाम ।

भजन (जो शरण तुम्हारी आतें हैं)

I

जो शरण राम की आते हैं, दुख दर्द सभी मिट जाते हैं ।
जो राम राम सदा गाते, भव सागर पार हो जाते है ।
जो शरण

II

उनको नही परवाह किसी को, जो तेरा नाम ध्यातेहैं ।
तेरे नाम के प्याले पी पी कर, तेरी मस्ती को पा जाते हैं ।
जो शरण

III

धन दौलत की परवाह नही,कोई और उन्हे चाह नही।
तेरी चाह में वह अपना सर्व,हर पल हर क्षण ही लुटाते हैं
जो शरण

IV

तेरी याद में रहते वह हर दम,तेरे नाम को जपते वह हर दम
तेरा ही रुप वह बन करके,बस तुझ में ही मिल जाते हैं।
जो शरण

V

सारे बड़भागिन सदा सुहागिन, राम नाम गुण चीन्हे।
अपने सांई के रंग राते, प्रेम माह रस भीने।
राम जी राम राम

अभिलाषा

तुम्हारे सहारे यह जीवन है मेरा

I

तुम्हारे सहारे यह जीवन है मेरा,
मेरे राम देते ही सहारा ही रहना।

II

मधुर तान वंसी सुने कान मेरे,
मधुर श्याम श्यामा लखें नयन मेरे।
यह जिह्वा मधुर नाम तेरा पुकारे,
राधा रमण चित चुराये ही रहना।
तुम्हारे सहारे

III

श्री ब्रजराज प्यारे, आनन्द सागर,
बिहारी बिहारिन, भरी प्रेम गागर।
प्रेम स्वरुपा अनूपा आनन्दा,
राधा रमण चित चुराये ही रहना।
तुम्हारे सहारे

IV

श्री बाँके बिहारी बांकी अदा से
श्री राधा के संग बसो मेरे मन में।
यह जीवन मरण हो तुम्हारे चरण में,
यह भक्ति हमेशा बनाये ही रहना।
तुम्हारे सहारे

V

श्री बृन्दावन धाम गोवर्धन प्यारा,
बरसाना गोकुल गोवर्धन रमण हो।
फटे तन की चादर यह जब हो पुरानी,
चटक प्रेम रंग चढ़ाये ही रहना।
तुम्हारे सहारे
राम जी रांम राम

मोर मुकट पीताम्बर धारी, करुणा के भंडार।
अविचल भक्ति प्रेम को बख्शो, आई हूँ तेरे द्वार।
मैं भी चाहूँ यह वरदान, पाऊँ भक्ति अनन्य महान।
भवसागर से तारो प्रभु जी, इसी जन्म में हो कल्याण।
राम जी राम राम

राम नाम की चूड़ियां पहरूं

I

हरि नाम का हार
सत संयम के साधन करके, करूँ मैं अब श्रृंगार।
मेरे राजा राम भर्तार
" " " "

II

तूं ही मेरा मात पिता है, तूं ही है घर बार।
तेरे नाम का आश्रय लेकर, भूलूं यह संसार।
मेरे राजा राम भर्तार
" " " "

III

मन मन्दिर में तुझे बिठा के, बन्द करूँ सब द्वार।
हरि के कीर्तन में रम जाऊँ, भूलूं सब संसार।
मेरे राजा राम भर्तार
" " " "
राम जी राम राम

भूमिका

श्रध्दा लागी संग प्रीतमे, इक तिल रहन न जाई।
मन तन अंतर रव् रहे, मेरे सांई सहज सुभाई।

संसारी सौभाग्य तो क्षणिक अर्थात नश्वर होता है। किन्तु उस परम पिता अखिल ब्रह्मांड नायक द्वारा प्राप्त सौभाग्य अखंड है,अजर हैअमर है।

वह पिता माता सभी कुछ तो है। इस आत्मा रुपी दुल्हन को अपना प्यारा पति परमात्मा प्राप्त हो गया। फिर तो वह अखंड सौभाग्य वती हो गई।

अब उस अविनाशी प्रभु का ध्यान एक क्षण को भी भूलता। यही तो अपने वर(रब)के प्रति अंखड प्यार का प्रतीक है।

राम जी राम राम

मैं तो वरुंगी अटल सोहाग रे

मै तो वरुगी अटल सोहाग रे, मन लागो भजन में।

II

हर पल हर क्षण याद तेरी आवे
सुन्दर छवि तेरी मन को भावे।
कर आई मैं सोलह श्रंगार,
रे मन लागो भजन में

III

मन मे जग जाए ज्योति तुम्हारी,
तेरे बिना मेरा कौन है मुरारी।
मैं तो आ गई तेरे द्वार ,
रे मन लागो भजन में

IV

सँसार सागर के तुम हो खिवैया,
डूबे नही अब मेरी नैया ।
नाम की हो पतवार ।
रे मन लागो भजन में

V

तूं दाता मैं दीन भिखारी, आगई अब तो मेरी बारी।
अब देर न करो मुरार ।
रे मन लागौ भजन में

VI

आठ पहर मेरे संग बसँत हो,नाम सदा मैं तेरा ही रटत हैं।
अविनाशी है मेरा सुहाग रे ।

VII

सतगुरु ने मेरी रंग दी चुनरिया,
राम पिआ मैं राम की दुल्हनियाँ।
कर आई मैं सोलह श्रंगार रे।
मर लागो भजन में
राम जो राम राम

और कछू चांहूँ नही कृपा सिंधु दयाला,
मन में तेरी प्रीत हो,करो कृपा कृपाला ।

अब मैं अपने राम रिझाऊं

I

गंगा जाऊ न जमुना जाऊ,न कोई तीरथ पाऊं ।
अब सब तीरथ घट के भीतर, ताहि में मल मल नहाऊँ ।
अब मैं

II

पात पात मेरो राम बसत हैं,ताहि को शीश नवाऊँ ।
अब मैं

III

जोगी भये न जटा बढ़ाई , जो रंग रंगे आप विधाता ।
ताहि का रंग चढ़ाऊँ –
अब मैं

IV

न मेरी वाणी न मेरी करनी , कैसे मै तुझ को पाऊँ ।
अब मैं

V

घट घट में मेरो राम वसत है, हर तन में उसकी मूरत है ।
प्राण प्यारे पर बलिहार जाऊँ ।
अब मैं

भूमिका

आस पिआसी मैं फिरु, कब पेखूं गोपाल ।
कोई साजन संत जन, है प्रभु मेलावण हार ?

हे प्रभु मैं तेरे चरणों की दासो हूँ अर्थात राम नाम रुपी तेरे चरणों का मैंने आश्रय लिया हुआ है अत तूं भी इतनी कृपा अवश्य करना कि मुझे अर्थात (अपनी जन्म जन्मान्तरों से बिछुड़ी आत्मा) को भूल मत जाना? यह तो तेरा ही अंश है और तुझ में ही समाना है अत कृपया अपना नाम ध्यान कभी न बिसरने देना ।

तूं दीन दुखियों का सहारा है । मुझ पर भी अपनी कृपा बनाए रखना ।

राम जी राम राम

मैं तो तेरी दासी

I

मैं तो तेरी दासी प्रभु जी मुझे न विसारण ।

II

जप तप दान नही,तीरथ स्नान नही ।
वेद ग्रन्थ ज्ञान नही, नही योग धारण ।

मैं तो तेरी

III

दीनन के नाथ स्वामी,परम प्रकाश गामी ।
चराचर विश्व स्वामी,सब सुख कारणा ।
मैं तो तेरी

IV

शरण पड़ी हूँ तेरी,पूरी करो आस मेरी ।
कीजिये न नाथ देरी, सुनिये पुकारना ।
मैं तो तेरी

V

तेरे गुण नित गाऊँ,चरणन में शीश नवाऊ ।
ब्रह्मानन्द रुप ध्याऊ, भवदुख हारना,
मै तो तेरी दासी

राम जी राम राम

हमने अपने आपकी, दे दी तुमको जेर ।
आगे मरजो आपकी, तो जाओ जिस ओर ।

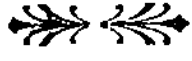

चाह

मन में तो बसी बस चाह यही,
प्रभु नाम तुम्हारा उच्चारा करूँ।

I

बिठला क तुम्हें मन मन्दिर में, मन मोहिनी रुप निहार कह।
मन में

II

भर के दृग पात्रों में प्रेम का जल,
पद पंकज नाथ पखारा करूं।
मन में

III

तुम भूले से आओ यहां पर कभी,
नयन नीर से चरण पखारा करूँ॥
मन में

IV

कर स्वच्छ सदा मन मन्दिर को,
तुझे आसन पर पधराया करूं॥
मन में

V

मृदु मंजुल भाव की माला बना,
तेरी पूजा का थाल सजाया करूं॥
मन में

VI

अब और नहीं कुछ पास मेरे,

निज प्रेम प्रसन्न चढ़ाया करुं।

मन में

VII

तुम आओ न आओ यहाँ पर कभी
निशि वासर तुमको पुकारा करुं

मन

VIII

तेरे नाम की माला सदा हे सखे
मन के मनके में फिराया करुं

मन

IX

जिस पंथ पै पांव धरिओ तुमने,
पलकें उस पंथ पै बिछाया करुं

मन

X

भर लोचन की गगरी नित हीं
पद पंकज पर ढुलकाया करुं।

मन

XI

तुम जान अयोग्य बिसारो मुझे,
पर मैं न तुम्हें विसराया करुं।

मन में

XII

गुण गान करुं नित ध्यान करुं,

तुम मान करो मैं मनाया करूं

मन

XIII

तेरे प्रेम पूजारियों की चरण धुरि,
सदा निज शीश चढ़ाया करूं

मन में

XIV

तेरे भक्तों की भक्ति करूं मैं सदा,
तेरे चाहने वालों को चाहा करूं

मन

(राम जी राम राम)

सर्वाधार नमष्कार

I

श्री राम तेरे नाम का मुझ को आधार है
तेरे नाम से ही, इस अब सागर से बेड़ पार है।

II

तेरे नाम बिना कुछ और मुझे सूझता नहीं,
इक पल भी तू न वीसरे,
मन मन्दिर सदा तेरा ही घर है

श्री राम तेरे

III

आशा लगी तेरे दर्शन की, मुझे दिनस रैन भर

तेरे नाम से ही चल रहा सारा संसार है
श्री राम तेरे

Iv

जब से लिया तेरा आसरा, हे मेरे प्रिय रघुवर
न चिंता है न गम तूं सुखों का भंडार है
श्री राम तेरे

V

पल पल में है सदा ही, याद हे प्रियतम,
तेरे दर्शन से ही मिलती मुझे शान्ति अपार है।
श्री राम तेरे

सत, संतोष, दया धरम, श्रंगार बनाऊँ ॥
सफल सोहागिन बनू मैं, अपने प्रभु भाऊँ ॥

राम जी राम राम

अभिलाषा

I

प्रभु जी हर घड़ी दिल में मुझे दिदार हों तेरा
तेरी हो याद से सतगुरु यह दिल गुलजार हो मेरा।
प्रभु जी

II

समाई हो फकत दिल मे, तेरी तसबीर ऐ सतगुरु
जबां से जब भी हो प्रियतम, सदा इजहार हो तेरा ॥
प्रभुजी

III

रहे साया तेरा प्रियतम, कि मुझ नाचीज पर हरदम,
फकत इतना कर्म मुझ पर, मेरी सरकार ही तेरा ॥

प्रभु जी

IV

तुम्हारे प्रेम का सतगुरु, यह दासन दास है तालिब,
तुम्ही से ज़िन्दगी मेरी, तुम्हीं संसार हो मेरा ॥

प्रभु जी

आज भी तेरा आसरा कल भी तेरा आस
सदा सदा तेरा साथ हो मैं दासों का दास ॥

अब तो तेरी हो गई, तू मेरा हो जाए,
तेरी ही छवि हे प्रभु, रहे इस मन में समाये ॥

राम जी राम राम

(समपर्ण)

I

हरि से मन लगा बैठे, जो होगा अच्छा होगा ।

II

न कोई आस दुनियां की, न कोई गम जमाने का ।
बसी है बात गुरुजन की, जो होगा अच्छा ही होगा ।

हरि से

III

सभी स्वारथ के साथी हैं, न कोई काम आएगा ।

जगी है जोत गुरुजन की, जो होगा अच्छा ही होगा।
हरि से

IV

मैं गाफिल तो ज़रुर ही हूँ,मगर दर का भिखारी हूँ।
लगी अब लगन गोविन्द की,जो होगा अच्छा ही होगा।
हरि से

राम जी राम राम

प्रेम की सर्व व्यापकता

I

महलों में नही, कुटियों में नही।
जंगलों में नही, बंगलों में नही।
है प्रेम जहाँ भगवान वही।

II

मन में जपो उसकी माला, सब जानता है जानने वाला।
जंत्र में नही मंत्र में नही, है प्रेम जहाँ, भगवान वही।
महलों में

111

ऐ सेवक तूं सच्चे मन से,कर प्रेम प्रभु के चरणों में।
कहे वेद यही,सब शास्त्र यही, है प्रेम जहाँ भगवान वही।
महलों में

IV

तज कर मेवे दुर्योधन के, मेहमान बने इक निर्धन के।

राजों में नही, ताजों में नही, है प्रेम जहाँ भगवान वही।
महलों में

(अनुभव)

I

अब आनन्द आनन्द आया।
तेरी कृपा को मैंने पाया।
तेरी दया को मैंने पाया।

II

अन्तरात्मा मेरी जागी, तेरे चरणों की लौ लागी।
कैसा सुन्दर रुप दिखाया, मेरे मन को अति हर्षाया।

III

अब जीवन सर्वस्व तुम हो, मेरे प्यारे प्रीतम तुम हो।
मैं तो केवल तेरी छाया, मुझे अपने में ही मिलाया।

IV

कैसी सुन्दर छवि है प्यारी, मेरे मन को हरने वाली।
तेरा जब से दर्शन पाया, मेरी सुध बुध सब विसराया।

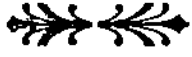

भूमिका

कुरबाण जाऊँ उस वेला सुहावी, जित तुमरे द्वारे आयो।
दासी को प्रभु भये कृपाला, सत्गुरू पूरा पायो ॥

जब आत्मा को अपने प्रियतम परमात्मा से साक्षात हो जाता है। फिरउसे दुनिया की परवाह नहीं रहती। उसका सर्वस्व अपने प्रभु के चरणों में अर्पित हो जाता है, किन्तु संसारी सम्बन्धियों को यह सब सहन नहीं होता तो आत्मा तड़प उठती है।

प्रभु कैसे तेरा भजन छोड़ दूं,
कैसे तेरी लगन छोड़ दूं,
कैसे तेरा ध्यान छोड़ दूं। न जाने

कैसे यह मनुष्य शरीर मिला है, इस अमूल्य दुर्लभ जन्म की सार्थकता केवल तेरा नाम, ध्यान, गुणगान में ही तो है। अतः कृपा करो प्रभो, हर पल तेरा दर्शन हो और हर क्षण तेरा नाम ही मुख में मन में रहे।

रामजी राम राम

मेरे राम प्यारे

I

मेरे राम प्यारे मेरे मन के सहारे,
बता तेरा कैसे भजन छोड़ दूं मैं।

II

यह दुनिया सतावे चाहे यह दुखावे,
बता तेरी कैसे लगन छोड़ दूँ मैं ।
मेरे राम–

III

जब से तुम आये, मेरे मन को भाये।
बता तेरा कैसे, दरश छोड़ दूँ मैं ।
मेरे राम –

IV

यह तेरी है दासी दरश की प्यासी ,
बता तेरी कैसे दरश छोड़ दुँ मै ।
मेरे प्यारे

V

बड़े भाग्य मैंने रतन जन्म पाया ,
करो कृपा अब तुम रघुराया ।
दासी तेरे गुण नित ही गावे ,
बता तेरी कैसे लगन छोड़ दूं मैं।
मेरे राम प्यारे-
राम जी राम राम

हरि की कथा कहानियां, गुरु मीत सुनाया ।
बलिहारी गुरु आपणे, गुरु की बलि जाइयां ।।

घर आये बजी वधाई ,
सच नाम की मिली वडियाई ।।

(सन्तुष्टता)

I

ऐ ते सारियां दुखां दा दारू,
पुड़ी इक राम नाम दी ।।

II

राम नाम की इक पुड़ी खाई, भूल गई सब तात पराई ।।
लोक लाज सब छोड़ छाड़ कर, तेरी शरणी आई ।
ते इक पुड़ी

III

दुख सुख अब मैं सम कर जाना, कृपा करो रघुराई ।
तेरे दर की बनी भिखारी, तैरी लगन लगाई
इक पुड़ी

IV

तू ही मेरा प्राण पति है, मैं हूँ दासी तुम्हारी,
चरणों में प्रभु अब मोहे रखना, मेरे कृष्ण मुरारी
इक पुड़ी

सब कुछ दीया आपने भेट करुं क्या नाथ,
नमस्कार की भेट करुं, जोड़ के दोनों हाथ ।।

आपे हरि इक रंग है, आप बहूरंगी ।।
जो तिस भावै नानका, सोइ गल चंगी ।।

(अनुभव)

हर श्वास मे हो सिमरण तेरा यूं ही बीत जाये जीवन मेरा

II

तेरे नाम की जपूं सदा माला, जानता है वह जानने वाला,
ऐसे ही सफल होगा यह जीवन मेरा
हर श्वास में हो

III

तेरी कृपा से मैंने सब कुछ पाया
जो मुख से नही जाये बताया
तेरे ही संग बीते जीवन यह मेरा
हर श्वास में हो

IV

रैण दिनस प्रभु तेरे गुण गाऊ
तुझको छोड़ कर न और कुछ ध्याऊँ
ऐसे ही बीते यह जीवन मेरा
हर श्वास में हो

V

प्राण प्यारे मेरे जीवन आधारे
हर श्वास यह तेरा नाम उच्चारे
मेरे मन में कर लिया आपने ड़ेरा
यूं ही बीत जाये

VI

तेरी यह सुन्दर छवि मन को लुभाये
तेरी ही याद प्रभु हरदम सताये

हाथों में कर्म तेरा नयनों में दर्शन तेरा
यूं ही बीत जाये
हर श्वास में हो यह जीवन

मेरे जीवन की नय्या तेरे हवाले ,
आप संभाले प्रभु आप संभाले
तूं ही मेरा जीवन तू ही मेरी नय्या

इंसान

किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं
पराया दर्द अपनाए उसे इंसान कहते हैं ।।

I

कभी धनवान है इतना, कभी इंसान निर्धन है
कभी दुख है, कभी सुख है, इसी का नाम जीवन है
जो मुश्किल में न घबराये उसे इंसान कहते हैं ।
किसी के

II

यह दुनियाँ एक उलझन हैं, कहीं धोका कहीं ठोकर
कोई जीता है रो रो कर, कोई जीता हैं हस हस के,
जो गिर कर फिर सँभल जायें उसे इँसान कहते हैं
किसी के

III

अगर गलती रुलाती है तो यह राह भी दिखाती है

मनुष्य गलती का पुतला है यह अक्सर हो ही जाती है।
जो गलती करके पछताये, उसे इंसान कहते हैं।

किसी के काम

नोट – भले लोगों का क्रोध जल में खिंची रेखा के समान होता है जो अधिक देर तक नहीं टिकता ॥

जीवन में चार बातें आवश्यक हैं

१) सतसंग २) सादगी
३) संयम ४) सिमरन

सतसंग मे सुने हुए उपदेशअमृत को पान करो, मनन करो, फिर हजम करो। तभी लाभ हैं

राम जी राम राम

(विश्वास)

अशरण शरण शान्ति के धाम मुझे भरोसा तेरा राम
मुझे भरोस तेरा राम
" " " "

II

तेरे भरोसे में बल बड़ा भारी तर गई जिससे संगत सारी
डोले न मन मेरा राम, मुझे भरोसा तेरा राम

अशरण शरण

III

तेरे भरोसे मैं लाड़ लड़ाया, तू मेरा पिता तू है मेरी माण

बिगड़े बन जांय मेरे काम, मुझे भरोसा तेरा राम।
अशरण शरण

IV

तेरी कृपा की खिले फुल वारी,मस्ती में बीते ये जिन्दगी सारी
तू ही है अब मेरा राम, मुझे भरोसा तेरा राम
अशरण शरण

राम जी राम राम

भूमिका

प्यारे प्रभु के भजन बिना जीवन में न वास्तविक आनन्द है न ही आत्मिक शान्ति है। प्रेम भक्ति द्वारा उस प्यारे प्रभु को प्राप्त किया जा सकता है।

वास्तविक संतोष के लिये राम नाम का अखंड जप व उस परम पिता का हर क्षण ध्यान रहना नितान्त आवश्यक है। अतः सारे भ्रम संशय छोड़ कर केवल उस प्यारे प्रभु का नाम जप, स्मरण, कीर्तन भजन जिस प्रकार भी हो उसे भूलने न पायें तभी इस मनुष्य जीवन की सार्थकता है।

राम नाम की लूट है,लूटी जाय तो लूट।
अन्त काल पछतायेगा,जब प्राण जांयेगे छुट।
राम जी राम राम

भजन

साँई भजन विना सुख शान्ति नही,
हरि नाम बिना आनन्द नही ।
सांई

II

प्रेम भक्ति बिना उध्दार नही ,
गुरु सेवा बिना निर्वाण नहीं ।
सांई भजन

III

जप ध्यान बिना संतोष नही ,
प्रभु दर्शन बिना प्रज्ञान नही ।
सांई भजन

IV

दया धर्म बिना सत्कर्म नही ,
भगवान बिना कोई अपना नही ।
सांई भजन

V

सांई नाम बिना परमात्मा नही ,
सतसंग बिना , सुख चैन नही ।
सांई भजन बिना

VI

राम नाम बिना , मन तृप्त नही ,
हरि ध्यान बिना , सन्तुष्टि नही ।
सांई भजन बिना

भूमिका

मेरे प्यारे प्रियतम ? सेवा सिमरण सतसंग व तेरा प्यार मैं कभी न भूलूं ? बस ऐसी ही कृपा से सदा मेरी झोली भरते रहना।

मैं अज्ञान हूँ मूढ़ हूँ अनजान हूँ किन्तु जैसी भी हूँ बस तेरी हूँ मेरा सारा जीवन ही तेरा जीवन है। अतः इसकी सार सँभाल आपने ही करनी है। आप ही मेरा आधार हो आप हो सर्वस्व ही आप में मेरा अखण्ड विश्वास ही आपकी अनुपायनी भक्ति और कृपा का प्रतीक है। अतः कृपा करो,कृपा करो,कृपा करो।

कर कृपा प्रभु दीन दयाला
साधुन की मन मगै खाला ॥

राम जी राम राम

याचना

मैनू सेवा सिमरण सतसंग,भूले न प्रीत ते प्यार तेरा।
मेरे सत गुरु मुझ पर मेहर करो,रहे ध्यान सदा दातार तेरा।

II

मैं अवगुण हारी कोई गुण न,मेरी लाज बचाना काम तेरा।
हुण तक तां उंगली लाई है, आगे भी चलाना काम तेरा।
मेरी जिन्द निमाणी नू साहिबा,है सिदक तेरा ऐतबार तेरा।

III

इस दर तों जो कुछ मिलया ऐ,मैं उस ते जीवन ढाल सका।
जो रहमत झोली पाइ है,करो रहमत उस नूं सम्भाल सका।
मेरे सिर पर रखना हाथ सदा,मैनूं सत गुरु है आधार तेरा

IV

इन्हा चरणा विच सदा ध्यान रहे,तेरे नगमे गांदी रहे रसना
जीवन के हर इक पेडे ते,दातार मेरे मैंनू राह दसना।
असी सब ही तेरे बच्चे हैं,सानूं याद रहे ऐ द्वार तेरा।
मैनू सेवा सिमरण

मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुवीर ।
अस विचार रघुवंश मणि, हरहु विषम भव भीड़ ।

जन्माष्टमी उत्सव

मन भाया है मन भाया है, श्री कृष्णा मेरे घर आया है ।

II

कोटि भानु शशि वदन उजारा,तारा गण मीठा मुकुट सितारा
बिजली चमकारा रुप सुहाया है ।
आज कृष्णा मेरे घर आया है ।

III

गगन महल में मुरली बजावै,मधुर २ धुन राग सुनावै ।

तन मन की सब सुध विसरावै परम प्रेम रस छाया
आज कृष्ण मेरे घर आया है।

IV

आप नाचे सब लोक नचावै, मिल सखिवन सब रास रचावै।
देख देख मेरा मन हरषावै तूं रुप अनेक बनाया है
आज कृष्ण मेरे घर आया है।

V

घट घट खेल करे गिरधारी, अचरज सुन्दर रचना भारी।
ब्रह्मानन्द परम सुखकारी, आज सतगुरु दरश दिखाया है।
आज कृष्ण मेरे घर आया है

मन माया है, मन भाया है,
आज कृष्ण मेरे घर आया है

"बोल वृन्दाबन बिहारी लाल की जय॥

श्री कृष्ण दया के सागर, त्रिभुवन के आधार।
तेरी महिमा कही न जाये, जय जय नन्द कुमार।
सब सृष्टि से सृष्टा हो तुम, घट घट के आधार।
सभी देव उपजोने बाले, जग के पालन हार।
राम जी राम राम

भजन

I

मन भज ले गोविन्द गोपाल

यह दुनियां सारी मतलब की,यहां कोई किसी का मीत नही
कोई काम नही आने वाला वाला
जो कुछ करना है करले - फिर समय नही आने वाला ।
मन भज ले गोविन्द गोपाल ।

II

जो तूं हरि के गुण गायेगा, तेरी नैया पार लगायेगा ।
तुझे दर्शन देगा नन्द लाल,तेरी सुध लेगा नन्द लाल ।
सब काम छोड़ उसको भजले सब आश छोड़ उसको भजले
फिर समय नही आने वाला ।
मन भज ले गोंविन्द गोपाला

III

जो तू नित सतसंग में आयेगा, तेरे मन में राम समायेगा २
तेरा ध्यान धरेगा सतगुरु प्यारा,
तेरे पाप काटेगा श्री राम प्यारा
हर श्वास मैं तू उसको भज ले,
हर पल बस तू उसको भज ले ।
फिर समय नही आने वाला २
मन भजले गोविन्द गोपाला ।

जय श्री राम जय श्री राम , जय जय प्राण धार ।

अमर अमर अविनाशी हो तुम, सकल विश्व आधार।

बोलो आनन्द कन्दे भगवान की जय।

राम जी राम राम

भजन

I

मेरे राम न दिल से भुलान मुझे,

अपने चरणों में देन ठिकान मुझे।

तेरा ही प्रभु आसरा, तेरी ही है टेक।

दासी की यही वेनती, करो दया गुरु देव।

II

मेरे मन राम नाम बसी, तेरे कारण श्याम सुन्दर जी।

सकल लोगां हँसी

मेरे मन

III

कोई कहे मीरा भई बावरी, कोई कहे कुल नसी।

मेरे मन

IV

कोई कहे मीरा दीप आगरी, नाम पिया सुरसी।

मेरे मन

V

खंडे धार भगति की न्यारी, काटी है जम की फँसी।

मेरे मन

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, शब्द सरोवर धँसी ।
मेरे मन राम नाम

नयनों में बस गये कृष्ण मुरारी,
इत उत देखूं प्रभु ओट तुम्हारी।

(चौदह)

भक्ति मार्ग में सहायक इन,पुष्पों की सुगन्ध से सुबासित हैं

१ सतसंग २ श्रृध्दा ३ अहिंसा ४ सत्य
५ अपरिग्रह ६ संतोष ७ तप ८ स्वाध्याय
९ भगवत शरणगति १० नाम जप ११ नाम कीर्तन
१२ दया १३ क्षमा १४ वैराग्य ।

(सुमधुर संकीर्तन)

I

मेरे रोम रोम से ध्वनि निकले,श्री राम हरे श्री राम हरे ।
मेरी जिह्वा हर पल यही सिमरे,
श्री राम हरे श्री राम हरे

II

हर समय तुम्हारा चिन्तन हो,हर कर्म तुम्हारी पूजा हो ।
ऐसा मेरा जीवन बदले
श्री राम हरे

III

मैं जग देखूं जहां कहीं, बस तेरी ही छवि दिखलाए।
मैं तूं का भेद न शेष रहे
श्री राम हरे श्री राम हरे

IV

हो राम तुम्ही और श्याम तुम्ही, शंकर भी तुम और दुर्गा भी
बिन भेद भाव के भजन करूँ
श्री राम हरे-२
मेरे रोम

V

तू ही सब जग का दाता है, दीन दुखियों का भाग्य विधाता है
तेरा हाथ सदा मेरे सिर पर रहे।
श्री राम हरे श्री राम हरे
मेरे रोम

VI

कैसी भी विषम परिस्थिति हो, आधार न तेरा छोड़ सकूं
बस इतना सदा विचार रहे
श्री राम
मेरे रोम

VII

सुख दुखो की चिन्ता है ही नही, भय है विश्वास न जाये कहीं
टूटे न लगी यह तार रहे
श्री राम हरे श्री राम हरे
मेरे रोम

VIII

यह जग तो केवल सपना है,यहाँ कोई नही प्रभु अपना है
बस तेरा सदा आधार रहे

श्री राम हरे

IX

मैं राम राम में रम जांऊ, तेरी ज्योति में मिल जाऊ
तेरे सिमरण में सदा ध्यान रहे

श्री राम

राम जी राम राम

(कीर्तन धुनि)

(शरणागति)

I

राम राघव राम राघव राम राघव पाहियाम्
कृष्ण केश्व कृष्ण केश्व रक्षयाम्

II

गुरू गोविन्दा, गुरु गोविन्दा – २ झाहियाम्

भूमिका

भगवान का गुण गाते गाते थक गये होंगे आइये जरा ताश ही खेला जाय ।

अर्थात संत जनों के साथ बैठ कर मन के समस्त विषय विकारों को धोने वाले प्यारे प्रीतम का गुण गान व नाम जप करें। जिस प्रकार एक दीपक से असंख्य ज्योतियाँ प्रकट हो जाती हे उसी प्रकार एक संत द्वारा न जाने कितने अज्ञानियों का उध्दार हो जाता है ।

सिमिर सिमिर सिमिर नाम जीवाँ,तन मन होई निहाला ।
चरण कमल तेरे धोई धोइ पीवाँ,मेरे सत गुरु दीन दयाला

राम जी राम राम

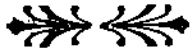

ताश का खेल

I

सन्त रूप सब मिल कर खेलो, ताशरे सांवरिया
इक्के से सब हो जाओ सत संगी रे साँवरिया ।

सन्त रुप

II

दुई को दो दिल से निकाल,एक रुप सब को जानो ।
तिग्गी में हैं तीन लोक,और आत्म ज्ञान को पहचानो ।

चउए मैं है चतुर्भुजी भगवान रे सांवरिया।

सन्त रुप

III

पंजे में है पाँच तत्व,जिनसे शरीर तैयार हुआ ।
छग्गे से छै शत्रु जीते,काम क्रोध को जीत लिया।
सत्ते में हैं सत्य नारायण रे सांवरिया।

सन्त रुप सब

IV

अट्ठे में है अष्ट भुजी, माता दुर्गे वह कल्याणी ।
नहले से वह निहाल कर दे,ऐसी है वह वरदानी।
दहले में है दयासिन्धु, भगवान रे सन्त सौवरिया।

सन्त रुप

V

गुलाम को जब जीत लिया,तो बेगम पर पैगाम गया ।
आप ही बादशाह बन बैठे,और अमर लोक को थाम लिया
सन्त रुप सब मिलका खेलो
ताश रे सांवारिया ।।

प्रेम चक्षु

मैंने देखा है मन्दिर, गुरुद्वारा आंखो में,
मैंने देखा है स्वर्ग का नजारा आंखो में।
यह वो आंखे हैं जो,प्रभु मार्ग हमें दिखाती हैं।
राम राम कहते ही,यह आंखे चमक जाती हैं।
मैंने देखा है देवी का द्वारा आंखो में,
मैंने देखा है देवी का द्वार आंखो में।
यही आंखे हैं जो रहमो कर्म करती हैं।
जिस ओर उठती हैं,ज्ञान भक्ति भरती है।
मैंने देखा है आलौकिक नजारा आंखो में,
मैंने देखा है आलौकिक नजारा आंखो में।
यही आंखें हैं जो, प्रभु का दीदार करती है।
यही आंखें हैं जो, सबको प्यार करती हैं।
मैंने देखा है अदभुत नजारा आंखो में,
मैंने देखा है अदभुत नजारा आंखो मे।
यही आंखे है जो,मुर्दों में जान लाती है।
यही आंखे हैं जो,प्रभु मार्ग हमें बताती है।
मैंने देखा है ब्रहाम्ड सारा आंखो में,
मैंने देखा है ब्रहाम्ड सारा आंखो में।
इन्ही आंखो की चमक, राह हमे बताती हैं।
दुख और सुख सम है,यह आंखे ही बताती हैं।
मैंने देखा है आशा का सहारा आंखो मे,
मैंने देखा है आशा का सहारा आंखो में।

भजन

I

नयनों में तुम हो हृदय में तुम हो
यह दर्शन नहीं है तो फिर और क्या है।

II

यह माना कि तुम ने जुदा कर दिया है।
मेरी गलतियों से अलग कर दिया है।
बुला करके दर पर नचाना गवांना,
ये मिलना नहीं हैं तो फिर और क्या है।

III

सुना है कि तुम प्रेम करते नहीं हो।
रुलाने से पहले सुनते नहीं हो।
बना कर के झांकी घर घर बुलाना,
मुहब्बत नहीं है तो फिर और क्या है।

IV

यह माना कि जल्दी से आते नहीं हो,
लगी लग्न दिल को बुझाते नहीं हो।
रवि चान्द तारों में जलवा दिखाना,
यह आना नहीं तो फिर और क्या है।

V

सुना है कि भक्तों से लड़ते तुम्हीं हो,
कि गाफिल बना कर रगड़ते तुम्हीं हो।
बना करके पागल बदनाम करना,
यह लड़ना नहीं है तो फिर और क्या है।

होली के रंग

I

होली आई रे कन्हाई होली आई ,
सुनादे जरा बांसुरी ।

II

तेरी बासुरी ने मोहे पागल कीन्हा ,
जब से घर में तूने डेरा कीन्हा ।
अब मोसे रहा न जाई ,
सुना दे जरा बांसुरी
होली

III

तेरे नाम की लगन लगाई ,
मेरी प्रीत अब तुमसे बन आई ।
अब तुझ बिन रहा न जाई ,
सुना दे जरा बांसुरी ।
होली आई रे,आई रे होली आई रे ।

होली

झूटे रंग नही रंगने, रंग रंगने रमे हुए राम के।
राम रंग कभी उतर न जाये,
कर कृपा गुरु दिया बताये।
झूटे रंग नही

II

प्रिय मुख लागो सो बड़भागी,
अति मीकी मेरी बनी खटोली।
झूटे

III

रुप न धूप न गंध न दीपा,
ओत पोत अंग अंग संग मोली।
झूटे रंग

IV

नाम ध्यान का रंग अब लागा,
कबहुँ न तेरी प्रीति छोड़ी।
झूटे रंग

होली

आज दृज में होली रे रसिया,
होली रे रसिया बर जोरी रे रसिया।
आज

II

इधर से आई कुँवर राधिका,

उधर से आए रे रसिया भक्तो की टोली ।

आज बृज

III

कैसे खेले हम होली रे रसिया,
अब तू मेरा रसिया,मैं तेरी दासी ।
तेरे ही रंग में रंग गई रसिया ।

आज बृज

IV

पहन लाल चोला तेरे द्वार आई,
अब रोकने से भी न रुकूंगी मैं रसिया ।

आज बृज

V

तूँ मेरा ठाकुर मैं तेरी दासी,
जनम जनम की मैं हूँ प्यासी,
अमृत रस में भीनी रे रसिया ।

आज बिरज में

होली

I

ब्रज मे होली आज खेलूं मैं ।

सांवरिया के संग

सांवरिया के संग अपने राम प्यारे के संग ।

II

हाथ में लीनी तेरे प्रेम की गगरिया,

इसमें सिमरण का रंग ।

ब्रज में होली

III

गली से निकली तेरी प्यारी प्यारी सखियां

होली खेलू मैं उन के संग ।

बना अट पटा — — — ब्रज में

IV

पलट पलट कर देखूं तुम को,

चढ़ा केसरिया रंग

ब्रज में होली

सांवरिया के सँग

होली

I

राम रंग अति मीठा है (मजीठा है)

कोई चढ़ाके देख ले,रंग जाता है मनुआ,कोई रंगाके देख लें

II

जब से सतसंगत मैं पाई,चढ़ा रंग अब मुझ पर भारी ।

राम नाम अति मीठा लागे,चढ़ गई नाम खुमारी ।

बहनों चढ़

III

राम नाम के रंग में डुबो के देख ले,

रंग जाता है मनुआ कोई ।

तेरे रंग में रंग गई प्रियतम,छोड़ दिया जग सारा ।

तेरे रुप की बनी मतवारी, बन गई चरणों की दासी।
प्रभु जी

IV

प्यारे राम का कभी न उतरे ऐसा रंग।
चढ़ाके देख लें रंग रंग जाता है,मनुआ कोई रंगाके देख लें।

होली

रंग लागा रे, रंग लागा,
मेरा सोया मनुआ जागा।
रंग लागा

II

संतों का संग किया, विषयों का रंग त्याग दिया।
मन में आनन्द जागा।

III

संतो की सेवा कीन्ही, विषय वासना सब तज दीन्ही।
अब सोने में हुआ सुहागा।
रंग लागा रे

IV

ऐसा राम रंग कभी उतर न जाये,
दिन दिन पल पल बढ़ता जाये।
अब चरण कमल अनुरागा।
रंग लागा रे

होली

आज प्रभु संग होली रे रसिया,
हरि मेरे संग खेलो होली रे रसिया।

II

काहे का मैं रंग आज घोलूं, काहे का साज सजाऊँ रसिया।
आज प्रभु संग होली

III

नाम रंग मैं घोलूँ मेरी सखियो, प्रीत का साज सजाऊँ रे रसिया
आज प्रभु संग

IV

नित नई है होली मेरे रसिया, प्रीति न होए ढोली मेरे रसिया
आज प्रभु संग

होली

आज मैं खेलूं सखी होली रे
सांवरिया के संग, अपने सांवरिया के संग ।।

II

कोरा कोरा मन मैं ो राखा, नाम का भर दिया रंग।
प्रीत लगी मोहे राम की ऐसी,
कभी न पड़े भंग
आज मैं

III

सास मेरी झिड़के, ननद मेरी बोले,ऐसा चढ़ गया रँग,
जैसे पी हो मैंने भंग
आज मैं

IV

नित नियम का पहन के चोला,अभ्यास का दे दिया रंग
ऐसा रंग कभी उतरे नाही,नित चढ़े सवाया रंग ।।
आज मै होली
राम जी राम राम

गीता सार

१) क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो ?
किससे डरते हो ? कौन तुम्हे मार सकता है ?
आत्मा न पैदा होती है न मरती है ?

२) जो हुआ वह अच्छा ही हुआ । जो हो रहा है वह वह भी अच्छा हो रहा है । जो होगा वह भी अच्छा ही ही होगा । तुम भूत का पश्चाताप न करो । भविष्य की चिन्ता न करो । वर्तमान चल रहा है ।

३) तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो ? तुम क्या लाये थे जो तुमने खो दिया? तुमने क्या पैदा किया था जो नाश हो गया ? न तुम कुछ लेकर आये,जो लिया यहीं से लिया,जो दिया यहीं पर दिया । जो लिया इसी (प्रभु) से लिया । जो दिया इसी को दिया। खाली हाथ आये खाली हाथ चले । आज तुम्हारा है कल किसी और का था,परसों

किसी और का होगा। तुमने इसे अपना समझा, यही दुख का कारण है।

४) परिवर्तन संसार का नियम है। जिसे तुम मृत्यु समझते हो। वही तो जीवन है। एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो। दूसरे ही क्षण तुम दरिद्र हो जाते मेरा तेरा,छोटा–बड़ा, अपना पराया, मन से मिटा दो, विचार से हटा दो फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो।

५) न शरीर तुम्हारा है, न तुम इस शरीर के हो। यह अग्नि,जल, वायु पृथ्वी,आकाश से बना है और इसी में मिल जायेगा,परन्तु आत्मा स्थिर है,फिर तुम क्या हो ?

६) तुम अपने आपको भगवान के अर्पण कर दो। यही सबसे उत्तम सहारा है। जो इसके सहारे को जानता है, वह भय,चिन्ता,शोक से सर्वदा मुक्त है।

७) जो कुछ भी तू करता है,उसे भगवान के अर्पण करता चल। ऐसा करने से सदा तू जीवन मुक्त का आनन्द अनुभव करेगा ॥

राम जी राम राम

माता की भेंट

(दिल की आवाज)

चेत्र – चित्त विच मेरे ख्याल आया,
तेनु दुखड़े मैं क्यों न सुना आवां ।
मारे गमां तो आप मैं छुट जावां ,
जिम्मेदारीयां तेरिया ला आवां ।

वैसाख – वैसाखी दीयां खुशियाँ मनान सारे,
मेरा चित्त वे बड़ा उदास मैया ।
होर कोई न मिलया हमदर्द मैंन्ड ,
इक तेरी ही आस है साथ मैया ।

जेठ – जे न तूं मेरी पुकार सुनी ,
दस की विगड़ेगा मां मेरा ।
वक्त अपना ते कट लवांगी मैं,
हो जायेगा नाम बदनाम तेरा ।

हाड़ – हाडे करां हाथ जोड़ मैया ,
मेरी नैया नू पार लगा दे तूं ।
तेरे दर दी आस मै लै आई,
दर आई दी लाज बचा लै तू ।

सावन – अखां दे विच हुन बसदा ऐ,
जे न दित्ता तु मैनु सहारा मैया ।
डुब गई जे नाव मंझदार अंदर,
फिर कौन कवेगा तेनु मां मैया ।

भादो — खुशियाँ दे मी बसदे ने ,
इयो सोच के मैं वी दरबार आई ।
दर आयौ दी आस पुजानी ऐ,
ऐस वास्ते झोली फैला आई ।

अस्सु — आसां दे सुंदर नजारे मैया ,
तेरे दर ते जय जयकार होई ।
सँगता ऐ जयकार लगा रइयाँ ,
आज पूर्ग सब दी आस होई ।

कत्ते — कदी न तेनु विसारां मैया ;
अपने नाम दा दई ज्ञान मैनूं ।
मेरे मन विच तू वस्से सदा,
तेरे चरणां दा रहे ध्यान मैनूं ।

मग्घर — मगन मन वाजां मार रहया,
हुन सुन लै ऐदी पुकार आपे ।
हर जगह मैया तू वसती ऐ,
हर जगह तेरा चमत्कार जापे ।

पौ — पया न हो उदास मना ;
तेरी पुकार विच दरबार पहुँची ।
रात गां दी आपे ही कट गई है,
जद वचड़ी विच दरबार पहुँची ।

माघ — मांग लवो जी मँगना है ,
आज माता ऐत्थे साक्षात पहुँची ।

हुन खाली नही किसी जाना है,
हर इक दी अर्ज दरबार पहुँची ।
फागुन – फांग खुशि दी छाई ,
देखो कैसा ऐ चमत्कार होया ।
किस्मत जाग गई आज सबदी ऐ,
आशा पूरियां ते मां दा दीदार होया ।

भजन

राम नाम के साबुन से,इस मन के मैल मिटायेजा ।
निर्मल मन के शीशे में,श्री राम के दर्शन पायेगा ।
निर्मल
मुठी मूद के आया जग में,हाथ पसारे जायेगा ।
न तूं किसी का न कोई तेरा,न कुछ संग में जायेगा ।
निर्मल मन
तन माया अभिमान न कर तू,यह तो आनी जानी है ।
राजा रंक अनेक हुए,कइयों की सुनी कहानी है ।
राम नाम का मन्त्र है,इसी को नित तू ध्याये जा ।
इस चोले का अभिमान न कर तू,प्रभु कृपा से पाया है ।
झूठ बधंन में फंस कर,मूर्ख क्यों भरमाया है ।
धन दौलत तेरा माल खजाना,सब कुछ यही रह जायेगा ।
निर्मल मन

झूठ कपट निन्दा को त्यागो,प्रभु से तुम इकरार करो।
घर आये महमान की सेवा , से न तुम इन्कार करो।
न जाने किस भेस में,तुम को नारायण मिल जायेगा।

निर्मल

निष्फल है सब भक्ति तेरी,जब तक मन विश्वास नही।
मजिल को पायेगा , जब दीपक में प्रकाश नही।
अन्त समय कुछ हाथ न आवे,सिर धुन धुन कर पछतायेगा।
निर्मल मन के शीशे में,श्री राम के दर्शन पायेजा।

राम नाम

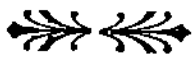

दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी, नमो नमो अम्बे दुख हरनी ।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी, तिहूँ लोक फैली उजियारी ।
शशिललारमुखमहाविशाला, नेत्र लाल भृकुटि विकराला ।
रुप मातु को अधिक सुहावै, दरशकरै जनअति सुखपावै ।
तुम संसार शक्ति लौ कीना, पालन हेतु अन्न धन दीना ।
अन्न पूरणा हुई जग पाला, तुम ही आदि सुन्दरी बाला ।
प्रलय कालसब नाशन हारी, तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ।
शिव योगी तुम्हरे गुण गावे, ब्रम्हा विष्णु तुम्हें नित ध्यावै ।
रूप सरस्वति का तुम धारा, दैसुबुद्धि ऋषिमुनिनउबारा ।
धरो रूप नरसिंह को अम्बा, परगट भई फाड़ के खम्बा ।
रक्षा करि प्रहलाद बचायो, हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ।
लक्ष्मी रुप धर्यो जग माहीं, श्री नारायण अंग समाहीं ।
क्षीरसिन्धु मे करत विलासा, दयासिन्धु दीजैमन आसा ।
हिंगलाज मे तुम्हीं भवानी, महिमा तव न जाय बखानी ।
मातंगी धूमा वति माता, भुवनेश्वरि बगला सुखदाता ।
श्री भैरव तारा जगतारणि, छिन्नभाल भव दुख निवारणि ।
केहरि वाहन सोह भवानी, लांगुर वीर चलत अगवानी ।
कर मे खप्पर खड्ग विराजे, जाको देखि काल डर भाजै ।
सोहे अस्त्र और तिरशूला, जाते उठत शत्रु हिय शूला ।
नगर कोटमें तुम्हीं विराजत, तिहूँ लोक में डंका बाजत ।
शुंभ निशुंभ दानव तुम मारे, रक्तबीज संखन संहारे ।
महिषासुर नृप अति अभिमानी, जेहिअघभारमहीअकुलानी ।
रूप कराल कालि को धारा, सेन सहित तुमतिहि संहारा ।
परी गाढ़ संतनपर जब जब, भई सहाय मातु तुम तब तब ।
आभापुर और बासव लोका, तवमहिमा सबके हैं अशोका ।

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी, तुम्हें सदा पूजैं नर नारी।
प्रेम भक्ति से जो यश गावैं, दुख दारिद्र निकट नहिं आवैं।
ध्यावैं तुम्हें जो नरमन लाई, जन्म मरण से सो छुटि जाई।
जोगीसुरमुनि कहत पुकारी, योग नहोबिन शक्तितुम्हारी।
शंकर आचारज तप कीनो, काम क्रोध जीत सब लीनो।
निशदिनध्यानधरो शंकर को, काहू काल नसुमिरो तुमको।
शक्ति रूपको मरम न पायो, शक्तिगई तबमन पछतायो।
शरणागत हुईकीर्ति बखानी, जै जै जै जगदम्ब भवानी।
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा, दई शक्ति न कीनबिलम्बा।
मोको मातु कष्ट अति घेरो, तुम बिनकौन हरे दुख मेरो।
आशा तृष्णा निपट सतावै, रिपुमूरखमोहि अतिडरपावै।
शत्रु नाश कीजै महारानी, सुमिरहुँइकचित्ततुम्हेंभवानी।
करो कृपा हे मात दयाला, ऋद्धिसिद्धि दैकरो निहाला।
जबलगिजियोदयाफलपाऊ, तुमरो जस मैं सदा सुनाऊँ।
दुर्गा चालीसा जो गावैं, सब सुख भोग परमपद पावैं।
देवीदास शरण निज जानी, करहु कृपा जगदम्ब भवानी।

॥ श्री दुर्गा चालीसा समाप्त ॥

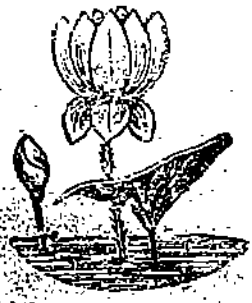

आरती श्री अम्बा जी की

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रम्हा शिव री ॥१॥ जय अम्बे०
मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको ।
उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको ॥२॥ जय अम्बे०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै ॥३॥ जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी ।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी ॥४॥ जय अम्बे
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योति ॥५॥ जय अम्बे
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती ।
धूम्रविलोचन नैना निश दिन मदमाती ॥६॥ जय अम्बे
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे ।
[illegible] दे उ मारे, सुर भयहीन करे ॥७॥ जय अम्बे
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ॥८॥ जय अम्बे
चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरूं ।
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥९॥ जय अम्बे
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तनकी दुखहरता सुख सम्पति करता ॥१०॥ जय अम्बे
भुजा आठ अति शोभित, वर-मुद्रा धारी ।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥११॥ जय अम्बे
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती ।
(श्री)माल केतुमे राजत कोटिरतन ज्योती ॥१२॥ जय अम्बे
(श्री)अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवनंद स्वामी, सुख सम्पति पावे ॥१३॥ जय अम्बे

कृपा-धाम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला ।
तेरी ओट पूर्ण गोपाला ॥

राम जी राम राम

कृपा धाम

C-2B, Janak Puri, New Delhi-110058. Ph. : 25517225